www.jvbi.ac.in

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं की ओर से रमेश कुमार मेहता (कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान) द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। मुद्रणालय - तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर में मुद्रित। सम्पादक - डॉ. समणी भास्करप्रज्ञा।

RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 13, Issue : 1, January-June 2021

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

दूसरी बार बने कुलपति
06

31वां स्थापना दिवस समारोह
12

विश्वविद्यालय देख अभिभूत हुए आचार्य श्री विजय धुरंधर सूरीश्वर
17

मूक्स पर पांच दिवसीय कार्यक्रम
24

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम
33

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed University)

Ladnun-341306, District Nagaur (Rajasthan) INDIA

A University Dedicated to Oriental Studies & Human Values

D.Lit. Ph.D. M.Phil. M.A./ M.Sc.

Jainology and Comparative Religion & Philosophy
Prakrit & Sanskrit
Nonviolence and Peace
Yoga and Science of Living

Regular and Distance Education

- M.S.W., English, M.Ed., B.Ed.
- B.A., B.Com, B.Sc.
- Integrated Courses (B.A.-B.Ed. & B.Sc.-B.Ed.)
- Various Diploma & Certificate Courses

- Value-based Education with Spiritual Ambience
- Lush Green Campus with Gurukul Environment
- Education for Women Empowerment and Entrepreneurship
- Student Exchange Programme with various National and International Institutions

Highlights :

- "Jaina Presidential Award" by Federation of Jaina Association in North America
- Asia Education Summit & Awards 2018 for achieving "Best Deemed University in Rajasthan"
- Ranked 10th in Top-25 Private/Deemed Universities in India-2019 by Higher Education Review
- Recognized in "The 20 Most Admired Universities in India 2017" by The Knowledge Review
- Smart Classrooms
- Rich Placements
- Air Conditioned Auditorium
- Wi-Fi Campus
- Hostel/Mess Facility
- More than 15 Labs

For more detail please visit - www.jvbi.ac.in or Contact Tel. 01581-226110, 224332, 226230

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता
जैन विश्वभारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

क्षमा से क्या मिलेगा ?

प्रश्न किया गया— **खमावणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ?** भंते! क्षमा करने से जीव क्या प्राप्त करता है? उत्तर दिया गया— **खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ। पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ। मित्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ।** क्षमा करने से जीव मानसिक प्रसन्नता को प्राप्त होता है। मानसिक प्रसन्नता को प्राप्त हुआ व्यक्ति सब प्राण, भूत, जीव और सत्त्वों के साथ मैत्री भाव उत्पन्न करता है। मैत्रीभाव को प्राप्त हुआ जीव भावना को विशुद्ध बनाकर निर्भय हो जाता है।

क्षमापना अर्थात् खमतखामणा करने से चित्त में प्रह्लादभाव पैदा हो जाता है। जहां-जहां बैर है, दुश्मनी है, गांठ बंधी हुई है, वहां मन में कुछ मलिनता रहती है, क्लेश का भाव रहता है और जिस व्यक्ति के प्रति द्वेष का भाव है, गांठ बंधी हुई है, उसे देखते ही मन में फिर आक्रोश की आग जल जाती है। प्राचीन साहित्य में कहा गया कि जो वैर का अनुबंध है, वह एक जन्म तक नहीं अनेक जन्मों तक रह सकता है। तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु ने 'अनुकम्पा री चौपई' में सुन्दर कहा है—

मित्री सूं मित्रीपणों चलीयों जावें,
वेंरी सूं वेंरीपणों चलीयों जावें।

मित्र से मित्रता का अनुबंध और शत्रु से शत्रुता का अनुबंध चलता रहता है। इसलिए किसी के साथ बोलचाल हो जाए, दुर्व्यहार हो जाए तो उसको धो डालना चाहिए। साफ कर देना चाहिए। उसे साफ करने का तरीका है— खमतखामणा करना। अंग्रेजी भाषा का एक शब्द है— सॉरी। थोड़ी-सी भूल, गलती या आशातना हो जाए तो तत्काल सॉरी बोलकर खेद प्रकट किया जाता है। यह तो छोटी बात के लिए है। कोई बड़ी बात हो जाए तो गांठ बांधकर न रखें। कोई समस्या हो तो मिल-बैठकर उसे सुलझाने का प्रयास करें, गांठ को काटने की बजाय उसे खोलने का प्रयास करें और चित्त को प्रसन्न बनाए रखें।

जैन परम्परा में संवत्सरी महापर्व आता है। उस दिन सायंकालीन प्रतिक्रमण के बाद परस्पर खमतखामणा का प्रयोग होता है। यह वर्ष में एक बार आता है। यह एक ऐसा पर्व है कि वर्षभर में हमारे द्वारा कोई अविनय, अशिष्ट व्यवहार हुआ हो या हमारे व्यवहार से किसी को कष्ट हुआ हो तो हम खमतखामणा करके उसे साफ कर लें। उसका महत्त्वपूर्ण आधारभूत श्लोक है-

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमन्तु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई।।

मैं सभी जीवों को क्षमा देता हूं, सभी जीव मुझे क्षमा दें। सभी प्राणियों के प्रति मेरा मैत्री भाव है। किसी भी प्राणी के प्रति मेरे मन में वैरभाव नहीं है। यह केवल बोलना ही नहीं है, वैसी अनुभूति भी होनी चाहिए। इसका मतलब है आदमी का मन साफ हुआ है, हल्का हुआ है। यह खमतखामणा का प्रयोग हर जाति, वर्ग और अवस्था वाले व्यक्तियों के लिए आचरणीय है।

अनुक्रमणिका

संपादकीय

01. नवोन्मेष के नये प्रकल्प : वैश्विक संप्रसार हमारा संकल्प 05

विशेष

01. सुयोग्य नेतृत्व-निर्देशन के कारण प्रो. बच्छराज दूगड़ दूसरी बार बने जैविभा विश्वविद्यालय के कुलपति 06
02. प्रथम स्वर्णिम कार्यकाल की प्रमुख अविस्मरणीय उपलब्धिया 07

विविध

01. पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति का सम्मान 10
02. देश के 10 प्रमुख प्रीमियम विश्वविद्यालय में जैविभा संस्थान शामिल 11
03. खुद पर विश्वास और परिश्रम से संभव है हर चुनौती का सामना- कुलपति 11
04. 31वें स्थापना दिवस समारोह का आयोजन 12
05. कोरोना की दवा 2-डीजी की खोज में संस्थान के प्रो फेसर की अहम भूमिका 14
06. वरिष्ठ शिक्षा शास्त्रियों एवं आचार्यों की बैठक में अनेक अनुशंसाएं 15
07. अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों के लिए कार्यालय का उद्घाटन 16
08. ऑनलाईन विश्व पर्यावरण दिवस आयोजित 16
09. विश्वविद्यालय देख अभिभूत हुए जैन आचार्य श्री विजय धुरंधर सूरीश्वर 17
10. संतों के निरन्तर प्रवास से रहती है परिसर में आध्यात्मिक ऊर्जा - कुलपति 17
11. दायित्व के प्रति समर्पण के साथ नियमितता एवं समयबद्धता जरूरी 18

जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग

01. महावीर जयंती व दर्शन दिवस पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित 19
02. विश्व दर्शन दिवस पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित 19
03. राष्ट्रहित के पुरोधा आचार्य महाप्रज्ञ को भारत रत्न से विभूषित किया जाये। 20
04. शंकराचार्य ने वेदान्त दर्शन से सभी धर्म सम्प्रदायों के बीच सामंजस्य का मार्ग दिया 20

योग एवं जीवन विज्ञान विभाग

01. पांच दिवसीय योग एवं जीवन विज्ञान कार्यशाला 21
02. प्राणिक हीलिंग शिविर में करवाया आभा मण्डल व ऊर्जा का अभ्यास 21
03. कोविड के प्रभाव से बढ़ते मनोरोगों और उनके निराकरण पर राष्ट्रीय वेबिनार 22

समाज कार्य विभाग

01. महिलाओं की स्थिति में सुधार के आंदोलनों को संबल मिले - प्रो. अश्विनी कुमार 22
02. सामाजिक उत्थान में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के योगदान पर वेबिनार आयोजित 22

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

01. दूरस्थ शिक्षा मूक्स व ओडीएल पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित 23
02. दूरस्थ शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका पर वेबिनार आयोजित 23
03. महामारी एवं दूरस्थ शिक्षा परीक्षा पर एक दिवसीय वेबिनार का आयोजन 23
04. स्वयं शिक्षण सामग्री के निर्माण एवं उनके पुनरावलोकन पर एक दिवसीय वेबिनार का आयोजन 23

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय

01. मैनेजिंग ऑनलाईन क्लासेज एण्ड डवलपिंग कंटेंट फॉर मूक्स पर पांच दिवसीय प्रोग्राम आयोजित 24
02. जैन संस्कृति, दर्शन व भाषा पर व्याख्यान आयोजित 24
03. जियो इन्फोर्मेटिक्स टेक्नोलॉजिज एण्ड कॅरियर अपॉर्चुनिटी पर ऑनलाइन वेबिनार आयोजित 25
04. शहीद दिवस मनाया 25
05. रामचरित मानस पर जीवन मूल्य विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन 26
06. हरित विपणन : सतत विकास की तरफ एक अभिनव पर व्याख्यान 26
07. प्रत्येक क्षेत्र के प्रगति में जनसंख्या है आवश्यक घटक 27
08 बसंत पंचमी पर्व मनाया 27

अहिंसा एवं शांति विभाग

01. शहीद दिवस पर किया गांधी को याद 27

शिक्षा विभाग

01. सात दिवसीय नेशनल एफडीपी कार्यक्रम 28
02. ग्रीन कैमेस्ट्पर व्याख्यान 28
03. नेनौ टेक्नोलॉजी पर व्याख्यान/शोध में सत्यनिष्ठा पर व्याख्यान/शिक्षा को कैसे बनाये आनंदकारी/ कृत्रिम बुद्धि की उपयोगिता पर व्याख्यान 29
04. आन्तरिक व्याख्यानमाला - शिक्षक प्रशिक्षण की भावी चुनौतियों में नवाचार व तकनीक 30
05. ग्रीन कम्प्यूटिंग को आंदोलन बनाना जरूरी/ शिक्षा का अधिकार/गुरू तेजबहादुर जन्म जयंती पर व्याख्यान 30
06. युवा शक्ति में असंतोष के कारण और निवारण/ कन्या भ्रूण हत्या पर व्याख्यान 31
07. स्वामी विवेकानन्द : मानव निर्माण की शिक्षा पर राष्ट्रीय वेबिनार 31
08. आजादी का अमृत महोत्सव पर वेबिनार व निबंध प्रतियोगिता 31
09. एक्सचेंज प्रोग्राम से ज्ञान का अधिक विनिमय संभव 32
10. डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता पर संवाद 32
11. भजनों की प्रस्तुति कार्यक्रम 32
12. नव वर्ष / पराक्रम दिवस आयोजित 32

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)

01. लड़कियां होती हैं अनमोल हीरा 33
02. मासिक सड़क सुरक्षा कार्यक्रम के तहत व्याख्यान 33
03. ऑनलाइन मनाया विश्व तम्बाकू निषेध दिवस 34

नेशनल कैडेट कौर (NCC)

01. गर्ल्स बटालियन का पांच दिवसीय शिविर संपन्न 34

Samvahini

(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)
जैन विश्वभारती संस्थान

वर्ष-13, अंक- 1
जनवरी-जून, 2021

संरक्षक
प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति

सम्पादक
डॉ. समणी भास्कर प्रज्ञा

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन
पवन सैन

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ – 341306
नागौर, राजस्थान
दूरभाष : (01581) 226110 226230
फैक्स : (01581) 227472
E-mail : jvbiladnun@gmail.com
Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

नवोन्मेष के नये प्रकल्प : वैश्विक संप्रसार हमारा संकल्प

देश-विदेश में निरन्तर तेजी से विख्यात हो रहे जैन विश्वभारती संस्थान के अन्तर्राष्ट्रीयकरण पर पूरा जोर दिया जा रहा है। कुलपति प्रो. बच्छराज जी दूगड़ ने इस पर सर्वाधिक ध्यान दिया है। उन्होंने संस्थान को अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से जुड़ाव और नवाचार आदि अपनाकर संस्थान को वैश्विक स्वरूप देने और यूनेस्को एवं यूएनओ के साथ भी सम्बंध बनाने पर ध्यान दिया है। संस्थान के 31वें स्थापना दिवस समारोह में अपने सम्बोधन में माननीय कुलपति ने इस प्राथमिकता को रेखांकित किया। पिछले कई वर्षों से इस दिशा में प्रयत्न किए जाते रहे हैं। संस्थान में जैन विद्या, प्राकृत, प्रेक्षाध्यान, योग, प्राकृतिक चिकित्सा आदि भारतीय सनातन विद्याओं के उत्थान, प्रसार और शिक्षण को श्रेष्ठ बनाने पर माननीय कुलपति जहां ध्यान दे रहे हैं, वहीं उनके वैश्विक प्रचार को व्यापक बनाने पर भी उनकी दृष्टि केन्द्रित है। संस्थान में इंफ्रास्ट्रक्चर को भी अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप दिए जाने एवं सुविधा-सम्पन्न बनाने पर जोर दिया जा रहा है। संस्थान द्वारा आगमों के अंग्रेजी अनुवाद करने और प्रेक्षा लाईव कार्यक्रम तैयार करके उन्हें देश-देशांतर तक पहुंचाने की योजना भी है।

जापान और बेल्जियम के विद्यार्थी यहां जैन विश्वभारती संस्थान में आए और यहां रहकर अध्ययन किया और उन्होंने इसका लाभ अपने देश में किए जा रहे नियमित पाठ्यक्रम के अध्ययन के बराबर प्राप्त किया। कुलपति प्रो. दूगड़ ने संस्थान में अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों के लिए एक कार्यालय का प्रारम्भ भी किया है। इस 'ऑफिस आफ इंटरनेशनल अफेयर्स' के अन्तर्गत नौ सूत्रीय अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों को रखा गया है, जिसमें विदेशी छात्रों के बीच प्रवेश प्रक्रिया की जानकारी देना, उनका स्वागत और समर्थन के लिए समन्वय पूर्वक कार्य करना, देश के बाहर होने वाली गतिविधियों और ब्रांड निर्माण सम्बंधी अभियान में सक्रिय रहना, विदेशी संस्थानों के साथ सभी सहयोगी गतिविधियों को पूरा करने के लिए सिंगल पॉइंट सम्पर्क रखा जाने, विदेशी छात्रों और प्रायोजक एजेंसी के बीच 'सम्पर्क निकाय' के रूप में कार्य करना, विदेशी छात्रों की समस्याओं और शिकायतों के निराकरण का कार्य करना, सभी छात्रों के साथ नेटवर्किंग की सुविधा देना, विदेशी छात्रों के भारत में प्रवास को आरामदायक, समृद्ध बनाने और नए सांस्कृतिक वातावरण के अनुकूल बनाने पर हर संभव सहायता प्रदान करना आदि कार्य किए जाएंगे। संस्थान में अनेकांत शोधपीठ के अन्तर्गत विदेशी छात्रों के लिए योजनाएं बनाई गई हैं। विदेशी छात्रों के लिए यहां सर्टिफिकेट कोर्स, स्नातक व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम तथा अल्प अवधि पाठ्यक्रमों का प्रारम्भ किया जाएगा। विदेशी छात्रों एवं संस्थानों के लिए एक मैगजीन के प्रारम्भ किये जाने की योजना है।

संस्थान सदैव परिवर्तन एवं नवोन्मेषी गतिविधियों के लिए सक्रिय एवं प्रसिद्ध रहा है। हाल ही शैक्षिक सुधार की दृष्टि से देश के वरिष्ठ शिक्षा-शास्त्रियों एवं आचार्यों के साथ बैठक करके प्रमाण पत्र, डिप्लोमा, डिग्री और स्नातकोत्तर स्तर के नए पाठ्यक्रमों के निर्माण पर विचार-विमर्श किया गया। इसमें नियमित एवं दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थियों को मूल्यनिष्ठा के साथ रोजगार-परक शिक्षा भी दिए जाने का प्रावधान सम्मिलित करने पर चिंतन हुआ। इन पाठ्यक्रमों के शिक्षण में नवीन तकनीक व सूचना-प्रौद्योगिकी का प्रयोग और उन्हें विदेशी छात्रों के साथ विदेशी विश्वविद्यालयों में भी प्रचारित किया जाना प्रस्तावित है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका 'एजुकेशन स्टालवार्ट्स' द्वारा जैन विश्वभारती संस्थान को विशिष्ट क्षेत्रों में नवीन शैक्षणिक आयामों के समावेशन एवं शोध व प्रसार सम्बंधी महत्त्वपूर्ण कार्यों तथा उपलब्धियों के लिए देश के 10 प्रमुख विश्वविद्यालयों में शुमार किया है तथा इसे प्रीमियम यूनिवर्सिटी घोषित किया है। इसके लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जाने के साथ ऑनलाईन प्लेटफार्म पर एक आलेख भी प्रकाशित किया है। प्रशस्ति पत्र में लिखा गया है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ युवा विद्यार्थियों को जीवन के नैतिक मूल्यों से युक्त करने का सकारात्मक उपक्रम स्फूर्त करने में यह विश्वविद्यालय अपने तीन दशकों की शैक्षणिक यात्रा में सफल रहा है। यह सब कुलपति की कर्मशील प्रवृत्ति, दार्शनिक सोच और समर्पित भावनाओं के कारण ही संभव हो पाया है।

यही कारण है कि कुलपति प्रो. बच्छराज जी दूगड़ की प्रशासनिक क्षमताओं से विगत पांच वर्षों में विश्वविद्यालय में आए सकारात्मक परिवर्तनों एवं प्रगति को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी की सम्यक् दृष्टि ने इसका आकलन किया और उससे अनुप्राणित होकर कुलाधिपति श्रीमती सावित्री जी जिन्दल ने उन्हें समय से पूर्व ही आगामी पांच वर्षों के लिए फिर से कुलपति पद पर नियुक्ति प्रदान की है। उम्मीद है कि आचार्यश्री महाश्रमण जी के अनुशासन एवं कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के प्रशासन में आगामी समय में यह विश्वविद्यालय अकादमिक क्षेत्र में नई ऊंचाइयां छुएगा, वहीं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नए प्रतिमान रचेगा।

यहां इसका उल्लेख भी सुसंगत होगा कि इस विश्वविद्यालय के एमिरेट्स प्रोफेसर डॉ. विनय जैन की शोध 2-डी-ओक्सी-डी-ग्लूकोज (2-डीजी) के आधार पर डीआरडीओ ने कोविड-19 के लिए दवा विकसित की है। यह खोज ऐतिहासिक और वैश्विक स्तर पर अपना महत्त्व रखती है। देश भर में इस दवा का उपयोग भी शुरु किया जा चुका है। यह संस्थान के लिए गौरव की बात है।

– डॉ समणी भास्कर प्रज्ञा

सुयोग्य नेतृत्व-निर्देशन के कारण प्रो. बच्छराज दूगड़ दूसरी बार बने जैविभा विश्वविद्यालय के कुलपति

संस्थान के इतिहास में पहली बार कुलपति की द्वितीय पदावधि मिलने पर सभी ने हर्ष जताया और शुभकामनाएं व्यक्त की

जैन विश्वभारती संस्थान के अब तक के इतिहास में यह पहली बार हुआ कि किसी कुलपति को लगातार दूसरी बार कुलपति के पद पर बने रहने का सौभाग्य मिला हो और यह सुअवसर माननीय प्रो. बच्छराज जी दूगड़ को प्राप्त हुआ। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के कार्यकाल की अवधि को आगामी पांच वर्षों के लिए फिर आगे बढ़ा दिया गया है। इस सम्बंध में कुलाधिपति सावित्री जिंदल ने विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सम्यक् दृष्टिबोध से अनुप्राणित होकर आदेश जारी करते हुए प्रो. दूगड़ के कुलपति कार्यकाल को आगामी अप्रेल में पूर्ण होने को ध्यान में रखते हुए उनके प्रशासनिक काल में विश्वविद्यालय की प्रगति और व्यवस्थाओं में हुए सकारात्मक परिवर्तनों के मद्देनजर आगामी पांच वर्ष की द्वितीय पदावधि के लिए संस्थान का कुलपति नियुक्त किया है।

गौरतलब है कि प्रो. दूगड़ ने इस विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ से ही निरन्तर जुड़े हुए हैं। विश्वविद्यालय के विशिष्ट विभाग अहिंसा एवं शांति विभाग के वे लम्बे समय तक विभागाध्यक्ष भी रहे थे। उन्हें यहां पहली बार कुलपति पद का दायित्व सुपुर्द किया जाने पर पूरे शहर में हर्ष व्याप्त हो गया था। यहां की 13 संस्था-संगठनों ने एक बड़ा समारोह आयोजित करके उनका अभिनन्दन किया था। इस समारोह में सांसद सी.आर. चौधरी व विधायक मनोहर सिंह ने उपस्थित होकर प्रो. बच्छराज दूगड़ का सम्मान बढ़ाया।

अकादमिक श्रेष्ठता और समदर्शी प्रबंधन का आदर्श प्रस्तुत

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष मनोज लूणियां एवं पूर्व अध्यक्ष डॉ. धर्मचंद लूंकड़ ने प्रो. बच्छराज दूगड़ को लगातार दूसरी बार पदावधि दिए जाने पर बधाई व शुभकामनाएं देते हुए बताया कि कुलपति के रूप में प्रो. दूगड़ के प्रथम कार्यकाल में संस्थान ने स्वावलंबन और अकादमिक श्रेष्ठता के साथ-साथ वस्तुनिष्ठ और समदर्शी प्रबंधन का आदर्श प्रस्तुत कर विकास के नए प्रतिमान रचे हैं, जिनकी सराहना सम्पूर्ण समाज के साथ अकादमिक जगत् ने की है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि उनके कुलपतित्वकाल में दूसरी पदावधि के सफल निर्वहन के साथ उत्तरोत्तर विकास की नई गाथा लिखी जाएगी।

विश्वविद्यालय को नई ऊंचाइयां प्रदान की

हाल ही में यहां पधारे पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सी.आर. चौधरी ने भी कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ से भेंट की और उन्हें दूसरी बार कुलपति बनने के लिए बधाई ज्ञापित की। उन्होंने कहा कि यह एक सुयोग्य व्यक्ति की पहचान है। प्रो. दूगड़ के नेतृत्व में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय ने नई ऊंचाइयां प्राप्त की थी और विश्वविद्यालय को एक अलग पहचान दिलवाने में वे सफल रहे थे। यह समूचे नागौर जिले के लिए गौरवपूर्ण है। चौधरी ने कुलपति दूगड़ के दूसरे कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं प्रदान करते हुए कहा कि उनके निर्देशन में यह विश्वविद्यालय वैश्विक क्षितिज पर छा जाने में सफल रहेगा। इस उपलब्धि के लिए प्रो. दूगड़ ने जैन समाज की प्रमुख संस्थाओं, पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित समाजसेवियों, गणमान्य व्यक्तियों जैन समाज एवं विद्वत जगत से अनेकानेक शुभकामनायें प्राप्त हुई।

प्रो. दूगड़ को दूसरी बार कुलपति का दायित्व सौंपे जाने पर यहां समस्त विभागों के विभागाध्यक्षों, कुलसचिव और शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक स्टाफ ने भी उन्हें बधाइयां दीं और उनके निर्देशन में विश्वविद्यालय के नई ऊंचाईयां छूने की उम्मीद जताई। स्टाफ की ओर से एक कार्यक्रम आयोजित किया जाकर प्रो. दूगड़ का सम्मान भी किया गया।

प्रथम स्वर्णिम कार्यकाल की प्रमुख अविस्मरणीय उपलब्धियाँ

राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ाया संस्थान का रुतबा, विभिन्न अत्याधुनिक सुविधाओं व व्यवस्थाओं से अग्रणी बना विश्वविद्यालय

माननीय कुलपति महोदय प्रो. बच्छराज दूगड़ के कुशल प्रशासनिक नेतृत्व में संस्थान के कुलपति के रूप में उनके प्रथम कार्यकाल के दौरान संस्थान ने अपने इतिहास में पहली बार इस शीर्ष शिखर को छुआ एवं अनेक नवीन उपलब्धियों को प्राप्त किया, जिनमें से प्रमुख उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है-

सुदृढ़ वित्तीय आधार

वर्ष	2016	2021
Corpus & FD Funds	37.75 Crore	54.80 Crore

विद्यार्थी संख्या (JVBI इतिहास की सर्वाधिक संख्या)

वर्ष	2015-16		2020-2021	
प्रणाली	Regular Mode	Distance Education	Regular Mode	Distance Education
विद्यार्थी संख्या	671	8325	1094	11097

सफल मूल्यांकन

भारत सरकार की विभिन्न संस्थाओं के द्वारा आयोजित UGC-Review, UGC-12B, UGC-ODL एवं NAAC के सफल मूल्यांकन हुए-

UGC – Review Jan. 19-21, 2017

UGC – 12B March 12-14, 2018

UGC – ODL Aug. 9-10, 2018

NAAC April 11-13, 2019

ISO प्रमाणीकरण

- ISO 9001:2015 (Quality Management System)
- ISO 45001:2018 (Occupational Health and Safety Management System)
- ISO 14001:2015 (Environment Management System)

नैच्युरोपैथी मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल की स्थापना

- ''आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल ऑफ नैच्युरोपैथी एण्ड योग'' रूपी महत्त्वाकांक्षी परियोजना की संकल्पना एवं उसके वास्तविक स्वरूप में रूपान्तरण का कार्य प्रारम्भ।

वेतन-वृद्धियाँ

- 7वें वेतन आयोग के अनुरूप संस्थान सदस्यों हेतु नवीन गणना-पद्धति विकसित कर संस्थान सदस्यों की पूर्ण सहमति के साथ अति सुगमता से नवीन वेतन-श्रृंखलाओं का क्रियान्वित किया गया, जिसके माध्यम से संस्थान को 7वें वेतन आयोग से पड़ने वाले भारी वित्तीय भार से भी संरक्षित रखा गया।

भौतिक संसाधनों का विकास

- डिजिटल स्टूडियो की स्थापना।
- स्मार्ट क्लासेज का संचालन।
- महिला-छात्रावास का नवीनीकरण।

संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों के लिए विशेष कार्य

- संस्थान के अनेक शिक्षकों को पायलट एवं लघु शोध परियोजनाओं के लिये स्टार्ट-अप ग्राण्ट प्रदान कर विभिन्न नवीन शोध-परियोजनाओं पर कार्य करने हेतु प्रेरित किया गया।
- अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तरीय संगोष्ठी, सम्मेलन, कार्यशाला, प्रशिक्षण कार्यक्रम, संकाय विकास एवं कौशल-विकास कार्यक्रमों का नियमित आयोजन।
- संस्थान के कर्मचारियों की गुणवत्ता में वृद्धि के लिये नियमित कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन।
- कॅरियर एडवांसमेंट नीति के अंतर्गत अनेक प्राध्यापकों को शैक्षणिक प्रोन्नतियां प्रदान की गयी।
- पूर्ण नियमों की अनुपालना के साथ अनेक शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक पदों पर नवीन नियुक्तियां प्रदान कर आवश्यक रिक्तियों को भरा गया।
- निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएँ - होमियोपैथी एवं एलोपैथी।
- संस्थान के समस्त सदस्यों हेतु नियमित खेलकूद की व्यवस्था।

विद्यार्थियों के लिए विशेष कार्य

- जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग तथा अहिंसा एवं शांति विभाग में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु निःशुल्क भोजन, आवास एवं अध्ययन की सुविधा प्रदान की गई।
- आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं के बौद्धिक, शैक्षणिक, कौशल एवं नेतृत्व विकास की क्षमताओं में वृद्धि हेतु विभिन्न क्लबों का गठन कर एक नवीन सफल प्रयास किया गया, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक क्लब को विभिन्न राष्ट्रीय, राज्य एवं अन्तर्महाविद्यालयी स्तरीय गतिविधियों के आयोजन हेतु प्रतिवर्ष 25,000/- की राशि प्रदान की जाती है।
- कोविड-19 की विशेष परिस्थितियों में एक शैक्षणिक सत्र का सफलतापूर्वक ऑनलाईन संचालन, जिस दौरान ऑनलाईन प्रवेश, ऑनलाईन नियमित कक्षाओं का आयोजन एवं नियमित तथा दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों की परीक्षाओं का ऑनलाईन आयोजन।
- UGC की Skill Development योजना के अंतर्गत संस्थान को ध्यान एवं योग के क्षेत्र में छः मासिक प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम संचालित करने की स्वीकृति प्राप्त।
- राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम द्वारा प्रायोजित योग, ध्यान एवं प्राकृतिक चिकित्सा प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन।
- संस्थान में संचालित विविध पाठ्यक्रमों हेतु ई-कण्टेंट (577 वीडियो एवं 819 पीपीटी) का निर्माण किया गया, जिनका उपयोग विद्यार्थियों द्वारा ऑनलाईन अध्ययन में किया जा रहा है।
- नवीन अल्पकालिक कौशल-विकास पाठ्यक्रम प्रारम्भ (बेसिक ट्रेनिंग ऑफ ब्युटी कल्चरल, कम्प्यूटर अकाउण्टिंग (टैली), अंग्रेजी संभाषण, एवं कम्प्यूटर हार्डवेयर)।
- विज्ञान एवं योग तथा मनोविज्ञान विषयों से संबंधित विभिन्न प्रयोगशालाओं का आधुनिकीकरण।

- प्रतिवर्ष अनेक राष्ट्रीय/राज्य स्तरीय अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगिताओं का आयोजन।
- कोविड-19 की विशेष परिस्थितियों में सौ से अधिक राष्ट्रीय स्तरीय वेबिनारों का आयोजन।
- संस्थान की एल्युमनी एसोसिएशन का पंजीयन।

विभिन्न नवीन नियमावलियों का निर्माण

- Guideline for Emeritus Professors, Guideline for JVBI Research Projects, Complaint Rules, Intellectual Property Right (IPR) Policy, Consultancy Policy, E-Governance Policy, Faculty Seed Grant Policy, Innovative Research Award Policy, Plagiarism Policy, Maintenance Policy, Policy for Financial Support to Faculty for Academic Development, Research Promotion Policy, Information Technology (IT) Policy, Grievance Redressal Policy, Women Grievance Redressal Policy for the Preservation of Sexual Harassment, Academic Integrity and Ethics Policy, Scholarship and Freeship Policy, Examination Policy, Code of Conduct Policy, SOP for Building Maintenance, SOP for Transport Maintenance, SOP for Equipment Maintenance, SOP for Electrical Maintenance, SOP for Library, SOP for Sports Facilities

विस्तार गतिविधियाँ

- जैन विद्याओं के विकास एवं प्रचार-प्रसार हेतु जैन विद्वत् सम्मेलनों, विभिन्न जैन आचार्यों के साथ परिचर्चाओं एवं पाक्षिक व्याख्यानमालाओं का आयोजन तथा विभिन्न शोध-परियोजनाओं का संचालन।
- अनेक अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तरीय शिक्षण संस्थानों एवं उद्यमों के साथ नवीन MoUs, Linkages एवं Collaborations स्थापित किये।
- Office of International Affairs की स्थापना।
- जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में बैंगलुरू में 3-4 अगस्त 2019 को आयोजित प्रथम ''तेरापंथ एनआरआई शिखर सम्मेलन'' में 13 देशों के अप्रवासी भारतीयों के समक्ष जैन विश्वभारती संस्थान का प्रस्तुतिकरण।
- आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में विशेष आयोजन-
  - विश्वविद्यालय के समस्त विभागों द्वारा आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं विश्व के अन्य प्रमुख विद्वानों के ग्रंथों की समीक्षा के कार्यक्रमों का आयोजन।
  - देशभर के 22 विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रणीत पुस्तक 'सम्बोधि' पर व्याख्यानमाला का आयोजन।
  - आचार्य महाप्रज्ञ के अवदानों को केन्द्र में रखकर विभिन्न विषयों पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशाला का आयोजन एवं आंतरिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत देश के प्रतिष्ठित विद्वानों के संभाषण।
  - जैन विद्या से संबंधित विभिन्न विषयों पर आधारित 15 मोनोग्राफों का प्रकाशन।
- प्रकाशन:
  - 30 से अधिक शोधपरक पुस्तकों का नवीन प्रकाशन।
  - युवा वर्ग को केन्द्र में रखकर जैन विद्या से संबंधित विविध विषयों पर आधारित 15 मोनोग्राफों का प्रकाशन।
  - संस्थान प्राध्यापकों के शोध-आलेखों की अनेक पुस्तकों का संस्थान द्वारा प्रकाशन।
  - संस्थान की त्रैमासिक रेफरिड रिसर्च-जर्नल 'तुलसी प्रज्ञा' यू.जी.सी. की CARE List में शामिल।

पुरस्कार/सम्मान/दर्जा

- संस्थान को विभिन्न सरकारी वित्तीय अनुदानों की प्राप्ति हेतु आवश्यक 12B का दर्जा यूजीसी से प्राप्त हुआ।
- संस्थान सम्मान
  - श्रेष्ठ शिक्षण, सेवा व शैक्षणिक गतिविधियों हेतु एशिया एशुकेशन सम्मिट, नई दिल्ली द्वारा 'बेस्ट डीम्ड युनिवर्सिटी इन राजस्थान' अवार्ड, अशोका होटल, नई दिल्ली, 15 मार्च, 2016
  - द नॉलेज रिव्यू मैग्जीन द्वारा वर्ष 2017 हेतु किये गए सर्वे में संस्थान का भारत के 20 सबसे प्रशंसित विश्वविद्यालयों की श्रेणी में चयन
  - दर्शन एवं दर्शन की विभिन्न शाखाओं के अन्तर्गत प्रसार, विकास एवं शोध संबंधी अद्वितीय कार्य हेतु अखिल भारतीय दर्शन परिषद्, लखनऊ द्वारा दर्शन क्षेत्र का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार ''डॉ. श्रीप्रकाश दुबे स्मृति राष्ट्रीय दर्शन पुरस्कार'', 22 अक्टूबर, 2018
  - हायर एजुकेशन एण्ड रिव्यू मैगजीन, बैंगलोर द्वारा वर्ष 2019 के लिए किये गए निजी एवं मान्य विश्वविद्यालयों के सर्वे में भारत के श्रेष्ठ 25 विश्वविद्यालयों की सूची में संस्थान को दसवें स्थान पर शामिल किया गया।
  - वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ एकेडमिक एण्ड एजुकेशनल इंस्टीट्यूट द्वारा संस्थान को 15 फरवरी, 2020 को मुम्बई के ताज होटल में आयोजित World HRD Congress में "Best in Class University" सम्मान प्रदान किया गया
  - एज्युकेशन स्टालवार्ट्स मैगजीन, महाराष्ट्र द्वारा किये गए सर्वे में संस्थान का ''India's 10 Best Universities to Watch in 2021'' के रूप में चयन।

- **कुलपति सम्मान**
  - World Education Congress द्वारा वर्ष 2017 में विश्व के 100 प्रभावशाली कुलपतियों में शिक्षाविदों के शोध, शिक्षा, साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के आधार पर चयन किया गया।

  - अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिष शोध-संस्थान द्वारा वर्ष 2019 में 'सुजला-रत्न' सम्मान से सम्मानित किया गया।
  - इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ ओरियण्टल हैरिटेज, कोलकाता की ओर से 7 फरवरी, 2020 को आयोजित 43वें वार्षिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में पश्चिम बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनखड़ ने ''विश्व कवि रविन्द्रनाथ टैगोर मैमोरियल अवार्ड'' से सम्मानित किया। माननीय कुलपति महोदय को यह सम्मान उनकी उत्कृष्ट विद्वता एवं प्राच्य विद्याओं के क्षेत्र में अध्ययन, शोध एवं विकास को संरक्षण, भारतीय संस्कृति के प्रसार एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुति के प्रयासों के लिये प्रदान किया गया।

- संस्थान के दो प्राध्यापकों प्रो. दामोदर शास्त्री एवं डॉ. योगेश कुमार जैन को राष्ट्रपति भवन में प्राकृत के क्षेत्र में विशेष कार्यों हेतु राष्ट्रपति सम्मान।
- संस्थान के योग एवं जीवन-विज्ञान विभाग के 6 विद्यार्थियों ने 7 विश्व रिकॉर्ड बनाए एवं अनेक विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राज्यीय प्रतियोगिताओं में संस्थान स्वर्ण पदक एवं रजत पदक प्राप्त किये।

- लाडनूं नगर की 13 संस्थाओं द्वारा कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ का अभिनन्दन।

अन्य प्रमुख उपलब्धियाँ

- केन्द्रीय पुस्तकालय में रखी पाण्डुलिपियों के दीर्घकालिक संरक्षण हेतु पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र की स्थापना, जिसके माध्यम से यूजीसी से परियोजना स्वीकृत करवाकर पाण्डुलिपियों के संरक्षण के क्षेत्र में अति महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया।
- केन्द्रीय पुस्तकालय की समस्त पुस्तकों के फिजिकल वेरिफिकेशन का कार्य किया गया। पुस्तकालय को इंटरनेट पर उपलब्ध करवाने के प्रयासों में प्रगति।
- बाह्य सदस्यों की विषय-विशेषज्ञ समिति का गठन कर संस्थान के सभी विभागों से विभागीय विवरण प्राप्त कर प्रतिवर्ष संस्थान के शैक्षणिक कार्यों का Academic Audits के माध्यम से नियमित अंकेक्षण।
- राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA) योजना के अन्तर्गत मानव संसाधन विकास मंत्रालय को 2653.7 करोड़ की योजनाओं हेतु आवेदन।

प्राकृतिक चिकित्सा का उपयोग पशु चिकित्सा में करने पर काम किया जाए- प्रो. शर्मा

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति का सम्मान

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने यहां जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के साथ सहयोगी रूप में कार्य करने की इच्छा जताई है। यह बात उन्होंने 9 जनवरी को यहां जैविभा विश्वविद्यालय के अवलोकन और जानकारी प्राप्त करने के बाद बैठक में जाहिर की। उन्होंने कहा कि लाडनूं में यह विश्वविद्यालय बहुत ही अच्छा कार्य कर रहा है। विशेष रूप से यहां की प्राकृतिक चिकित्सा की व्यवस्था सराहनीय है। वे चाहते हैं कि इसका उपयोग पशु चिकित्सा की दृष्टि से भी किया जावे और इस दिशा में विकास व अनुसंधान हो। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने उन्हें जैविभा विश्वविद्यालय में संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों की जानकारी दी और यहां की विशेषताओं के बारे में बताया। इस अवसर पर यहां उनका विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों द्वारा स्वागत-सम्मान किया गया। प्रो. नलिन के. शास्त्री ने उन्हें विश्वविद्यालय का स्मृति चिह्न और साहित्य भेंट किया। इस अवसर पर उनके साथ पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट आफ वेटरनरी एजुकेशन एंड रिसर्च, जयपुर की डीन प्रो. संगीता शर्मा व प्रसार शिक्षा निदेशालय के निदेशक डॉ. राजेश धूड़ीया भी थे। उनका भी इस अवसर पर स्वागत किया गया। उनके साथ आयोजित बैठक में रजिस्ट्रार रमेश कुमार मेहता, दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. अनिल धर, वित्ताधिकारी आर.के. जैन, डॉ. विजेन्द्र प्रधान, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत आदि उपस्थित रहे।

देश के 10 सर्वोच्च विश्वविद्यालयों में संस्थान शामिल

जैन विश्वभारती संस्थान को विशिष्ट क्षेत्रों में नवीन शैक्षणिक आयामों के समावेशन एवं शोध तथा प्रसार के रूप में किये गए प्रमुख कार्यों एवं उपलब्धियों हेतु अन्तर्राष्ट्रीय स्तरीय पत्रिका एजुकेशन स्टालवार्ट्स द्वारा इस क्षेत्र में कार्य करने वाले भारत के प्रमुख 10 विश्वविद्यालयों की श्रेणी में वर्ष 2021 के लिए एक प्रमुख स्थान प्रदत्त करते हुए प्रीमियम यूनिवर्सिटी के रूप में घोषित किया है। इस सम्मान के साथ प्रदत्त प्रशस्ति-पत्र में उल्लेख किया गया है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ युवा छात्र-छात्राओं के जीवन को नैतिक मूल्यों से युक्त करने का सकारात्मक उपक्रम स्फूर्त करने में यह विश्वविद्यालय, अपने तीन दशकों की शैक्षणिक यात्रा में सफल हुआ है।

इस सम्बंध में संस्थान की उपलब्धियों पर एक प्रमुख आलेख ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी प्रकाशित हुआ है। ज्ञातव्य है कि जैन विश्वभारती संस्थान ने मानवीय मूल्यों की गरिमा को प्रतिष्ठित करते हुए सुप्रसिद्ध अध्यात्मवेत्ता एवं दूरदर्शी संत गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ के पौर्वात्य ज्ञान भण्डार को आधुनिक विज्ञान के कथ्यों के साथ एकीकृत करने में सफलता पायी है और यह ज्ञान यात्रा वर्तमान अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के संप्रेरण से अग्रसर है।

विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति एवं सुविख्यात दार्शनिक प्रो. बच्छराज दूगड़ के नेतृत्व में यह संस्थान छात्रों की पूर्ण संतुष्टि के लिए शैक्षिक सेवाओं की उच्चतम गुणवत्ता और उन्हें आध्यात्मिक चेतना और नैतिक मूल्यों के साथ एक एकीकृत व्यक्तित्व के विकास की संप्राप्ति हेतु सदैव प्रतिबद्ध है एवं अनेकांत, अहिंसा, सहिष्णुता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के उच्च आदर्शों को व्यवहार में लाने, बढ़ावा देने तथा प्रचार करने की दिशा में भी पूरी सक्रियता के साथ अग्रसर है। संस्थान की इस प्रमुख उपलब्धि के अवसर पर प्रो. जगतराम भट्टाचार्य, रविन्द्रनाथ टैगोर, शांतिनिकेतन, पश्चिम-बंगाल, संजय शर्मा, कानूनी सलाहकार, नेक, बैंगलोर, प्रो. के.एन. व्यास, जोधपुर, प्रकाश बरड़िया, हैदराबाद, प्रो. एस.एन. जोशी, जोधपुर, धरमचंद जैन, प्रो. आर.एस. यादव, कुरुक्षेत्र, प्रो. अशोक बाफना, हीरालाल मालू, बी.सी. मालू, सुरेन्द्र बोरड़ आदि अनेक वरिष्ठ शिक्षाविदों एवं समाजसेवियों की शुभकामनाएँ प्राप्त हुईं।

नववर्ष पर शुभकामना समारोह का आयोजन

खुद पर विश्वास और परिश्रम से संभव है हर चुनौती का सामना- कुलपति

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि मेहनत से ही सफलता को प्राप्त किया जा सकता है। सफलता के लिये सोच को भी बड़ा बनाने की जरूरत है। खुद की भावनाओं में जो ताकत होती है कि व्यक्ति हर चुनौती का सामना सहज रूप से कर सकता है। यह खुद पर विश्वास ही है कि व्यक्ति चुनौतियों का सामना करने के लिए जीत का विश्वास रख पाता है। उन्होंने यहां महाप्रज्ञ सभागार में नववर्ष पर। जनवरी को आयोजित समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने बताया कि जीवन में नकारात्मकता को छोड़ने और नवीनतम टेक्नोलोजी को अपनाने के साथ अपने पूर्ण सामर्थ्य का उपयोग करने से चुनौतियां आसान बन जाती है। उन्होंने इस अवसर पर नव वर्ष की शुभकामनायें देने के साथ नये वर्ष में सफलता के सम्बंध में कुछ टिप्स दिये।

कार्यों का पुनरावलोकन अवश्य करें – कार्यक्रम में प्रो. नलिन के. शास्त्री ने नेतृत्व क्षमता के बारे में बताते हुये कहा कि चाहे कोई संस्था हो, समाज हो या देश हो, सबमें नेतृत्व शक्ति सबसे महत्त्वपूर्ण होती है। उन्होंने बीते वर्ष के अपने कामों का पुनरावलोकन करने और नववर्ष में सुधार के साथ नई चुनौतियों का मुकाबला करने की आवश्यकता बताई। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने आपदाओं को अवसर में बदलने की आवश्यकता बताई। शिक्षा विभाग के प्रो. बीएल जैन, अंग्रेजी विभाग की प्रो. रेखा तिवाड़ी, समाज कार्य विभाग के डॉ. बिजेन्द्र प्रधान, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, अहिंसा एवं शांति विभाग के प्रो. अनिल धर व वित्ताधिकारी आरके जैन ने भी अपने विचार रखे एवं नये साल की शुभकामनायें दीं। कार्यक्रम के अंत में रजिस्ट्रार रमेश कुमार मेहता ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. युवराज सिंह खांगारोत ने किया। कार्यक्रम में समस्त शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक स्टाफ मौजूद रहा।

नववर्ष पर मंत्रानुष्ठान – यहां जैन विश्व भारती स्थित भिक्षु विहार में मुनिश्री सुमति कुमार ने नववर्ष के अवसर पर मंत्रानुष्ठान का आयोजन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि जीवन को सुखी, शांतिपूर्ण और सफल बनाने के लिये जरूरी है कि हम नई शुरुआत करने के लिये संकल्प करें और पुरुषार्थ करें। हमें अपनी कमियों को दूर करके जीवन में सम्पन्नता और शांति लानी चाहिए। परिवार में शांति कायम हो, मन में शांति रहे, इसके लिये वाणी में मधुरता और मंदता होनी चाहिए। उत्तेजित होकर कभी नहीं बोलें। प्रतिदिन सोते समय श्वास ग्रहण करते समय शांति का संकल्प लें, परिवर्तन होना शुरु हो जाएगा। कार्यक्रम में उन्होंने मंगलपाठ, भक्तामर स्तोत्र का पाठ, मंत्रों के विविध प्रयोग करवाये और उनके लाभ बताए। इस अवसर पर जैन विश्व भारती एवं विश्वविद्यालय के समस्त कार्मिक एवं श्रावकगण उपस्थित रहे।

31 वें स्थापना दिवस पर समारोह का आयोजन

अपने विचारों पर ध्यान केन्द्रित करके किया जा सकता है अच्छी आदतों का निर्माण- प्रो. गोदारा

कुलपति दूगड़ ने विश्वविद्यालय को अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप देने पर दिया जोर

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा के कुलपति प्रो. आरएल गोदारा ने कहा है कि चरित्र की पहली सीढी है अपने विचारों पर ध्यान देना, विचारों को केन्द्रित करना। हमें कभी अपने मन के वश में नहीं होना चाहिए, क्योंकि मन तो क्षण-क्षण में बदलता रहता है। विद्यार्थियों को इस ओर पूरा ध्यान देना चाहिए और अपने जीवन में अच्छी आदतों का निर्माण करना चाहिए। जो भी समय या कार्यक्रम तय किया जाता है, उस पर काम करें, वे आदत बन जाएंगे। जहां आदत नियमित होती है, वहां चरित्र निर्माण होगा और आदर्श चरित्र ही मूल्यवान होता है। वे यहां 20 मार्च को जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के 31वें स्थापना दिवस पर महाप्रज्ञ-महाश्रमण सभागार में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। समारोह की अध्यक्षता करते हुए जैविभा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि प्राकृत भाषा और साहित्य का विस्तार इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य है। इस ओर हमें सर्वाधिक ध्यान देना होगा। इन उद्देश्यों के अनुरूप ही संस्थान के पाठ्यक्रमों का संचालन करना है। इस दिशा में काफी कार्य किए गए हैं और अब जैन विद्या के विद्वानों को तैयार करने के कार्य को विस्तार देना है। प्राकृत भाषा का प्रचार-प्रसार करके इसे जन-जन तक पहुंचाना है। जैन आगमों के अंग्रेजी में अनुवाद का कार्य भी करना होगा। योग व जीवन विज्ञान विभाग को देखना होगा कि प्रेक्षा लाईव कार्यक्रम किये जाकर उन्हें देश-देशान्तर तक फैलाया जा सके। इन्हें आमजन तक पहुंचाना आवश्यक है।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से जुड़ाव हो

कुलपति प्रो. दूगड़ ने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का जुड़ाव संस्थान और इसके विभागों के साथ हो सके, इस ओर ध्यान देना होगा। यूनेस्को व यूएनओ के साथ संस्थान के सम्बंध संस्थागत सहयोगात्मक बने, इस नवाचार को अपनाना होगा। उन्होंने बताया कि राजस्थान में निजी विश्वविद्यालयों में दूरस्थ शिक्षा केवल दो ही प्रमुख हैं, जिनमें जैविभा संस्थान का ही सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान है, यहां इनकी प्रतिष्ठा प्रामाणिकता के लिए है। कुलपति दूगड़ ने गूगल जैसे सर्च इंजिन पर भारतीय संस्कृति सम्बंधी प्रत्येक खोज में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की उपस्थिति नजर आए, इसका प्रयास करने पर भी जोर दिया। उन्होंने ऑनलाईन शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि विद्यार्थियों के लिए 'सीखो और साथ में कमाओ' की नीति के अनुरूप सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने पर आय का साधन भी मिलने का आश्वासन दिया और कहा कि शिक्षा के साथ विद्यार्थी इससे कुछ कमाई भी कर सकते हैं। प्रो. दूगड़ ने बताया कि यूजीसी ने विभिन्न देशों के पारस्परिक पाठ्यक्रमों को मान्यता देने की

स्वीकृति प्रदान की है। इसके तहत नई शिक्षा नीति में यहां के पाठ्यक्रमों को विदेशी विश्वविद्यालयों में और वहां के कोर्सेज को यहां क्रेडिट मिलने का प्रावधान है।

विदेशों में है यहां के पाठ्यक्रमों को मान्यता

उन्होंने बताया कि हाल ही में बेल्जियम और जापान के विद्यार्थी यहां जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय में आए और अध्ययन किया, जिसका लाभ उन्हें अपने देश में भी वहां के पाठ्यक्रम के समान ही प्राप्त हुआ। यह विश्वविद्यालय एक भाषणमाला का आयोजन करने जा रहा है, जिसमें समाज के लोगों को भी जोड़ा जाएगा। आगामी एक-दो सालों में समग्र जैन समाज के लोगों को इससे जोड़ा जाएगा। यह काम निर्धारित नीति के तहत किया जाएगा तथा इससे विश्वविद्यालय का विस्तार संभव होगा। उन्होंने इस अवसर पर प्राकृतिक एवं योग महाविद्यालय के काम के बारे में बताते हुए कहा कि अगले साल सत्र 2022 में यहां पाठ्यक्रमों में अध्ययन शुरु करवा दिया जाएगा। इससे पहले 2021 में ही प्राकृतिक व योग चिकित्सा का कार्य शुरु कर दिया जाएगा। प्राकृतिक व योग चिकित्सा की सफलता के बाद यहां आयुर्वेद चिकित्सा को भी इससे जोड़ा जाएगा। वर्तमान समय में लोगों का काफी रुझान इन पद्धतियों की तरफ है। उन्होंने जैन विश्व भारती की हीरक जयंती पर अगले वर्ष बड़े पैमाने पर कार्यक्रमों के आयोजन के बारे में भी जानकारी दी।

श्रेष्ठ विद्यार्थी और श्रेष्ठ कर्मचारी का सम्मान

कार्यक्रम में समणी नियोजिका प्रो. समणी मल्लीप्रज्ञा ने अपने सम्बोधन में शिक्षा, संस्कार, साधना, शोध, सेवा पर जोर देते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय इसके लिए समर्पित है। प्रारम्भ में प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कैरियर के साथ कैरेक्टर बिल्डिंग की विशेषता के बारे में बताया और कहा कि यहां मूल्यों को शिक्षा के केन्द्र में रखा गया है तथा आचार्य महाप्रज्ञ प्रवर्तित अहिंसा प्रशिक्षण की तकनीक को व्यावहारिक तौर पर जमीन पर उतारा है। कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने विश्वविद्यालय का वार्षिक प्रगति विवरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में समाजसेवी भागचंद बरड़िया मंचस्थ रहे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के श्रेष्ठ विद्यार्थी का अवार्ड दिव्यता कोठारी, जय ललिता, निकिता शर्मा व साक्षी प्रजापत को दिया गया। श्रेष्ठ एनसीसी कैडेट का सम्मान आकांक्षा डूकिया को दिया गया। योग के क्षेत्र में योगदान के लिए योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों पूनम स्वामी व सुरेश दीक्षित को प्रदान किया गया। चैम्पियन आफ चैम्पियन्स का खिताब स्नेहा पारीक को प्रदान किया गया। इस वर्ष का विद्यानिधि सम्मान डॉ. बलवीर सिंह चारण व डॉ. सुनीता इंदौरिया को दिया गया। बेस्ट वूमन आफ यूनिवर्सिटी का अवार्ड प्रगति चौरड़िया को दिया गया तथा श्रेष्ठ कर्मचारी का अवार्ड घासीलाल शर्मा व करण गुर्जर को दिया गया। बी वर्ग के श्रेष्ठ कर्मचारी का सम्मान दिनेश शर्मा, जगदीश सिंह शेखावत, सुनील कुमार, संजय व मनोज को प्रदान किया गया। कार्यक्रम मुमुक्षु बहिनों के मंगलाचरण से प्रारम्भ किया गया। अंत में प्रो. नलिन के. शास्त्री ने आभार ज्ञापित किया। डॉ. युवराज सिंह खांगारोत ने कार्यक्रम का संचालन किया।

कोरोना की दवा 2-डीजी की खोज में संस्थान के प्रोफेसर की अहम भूमिका

कोविड-19 के उपचार की भारतीय दवा के आविष्कार में संस्थान के प्रोफेसर इमेरिटस की शोध बनी आधार

भारत की शीर्ष शोध संस्था डी.आर.डी.ओ. द्वारा कोविड-19 के उपचार के लिए विकसित की गयी दवा के विकास के मूल में जैन विश्वभारती संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के प्रोफेसर इमेरिट्स प्रो. विनय जैन की शोध आधार बनी है। मार्च 2020 में उनके द्वारा प्रकाशित शोध पत्र में 2-डी-ओक्सी-डी-ग्लूकोज (2-DG), जो एक रेडियो-कीमो मोडीफायर दवा के रूप में कैंसर के उपचार में उपयोगी होता है, के कोविड-19 के उपचार हेतु उपयोग किये जाने पर जोर दिया गया था। प्रो.जैन के साथ पातंजलि योग पीठ, सविता इंस्टीटयूट और मेडिकल एण्ड टेक्नीकल साइन्सेज के शोधार्थियों ने लीजेंड रिसेप्टर डोकिंग तकनीक का प्रयोग किया और मौलीक्युलर डाईनेमिक्स विश्लेषण के माध्यम से वायरस रिसेप्टर्स का अध्ययन किया।

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम से मिला था प्रोत्साहन

2-डीजी दवा कैंसर के इलाज के लिए बनाई गई थी, जिसे कोरोना मरीजों पर ट्रायल किया गया। भारत में वर्ष 1972 से इस दवा पर जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एमेरेट्स एवं दिल्ली एम्स के पूर्व चिकित्सक प्रो. विनय जैन शोध कर रहे थे। राष्ट्रपति रहे डा. अब्दुल कलाम ने उन्हें इसके लिए प्रोत्साहित किया था। उनकी कैंसर की दवा के रूप में सफल शोध को आधार बनाकर ही बाद में डीआरडीओ के प्रमुख प्रो. जी. सतीश रेड्डी और आइएनएमएस के निदेशक प्रो. अनिल मिश्रा के निर्देशन में इस दवा को अमल में लाने का कार्य किया जा रहा है।

दिल्ली स्थित डीआरडीओ की इस दवा को 1995 से पहले अमेरिका से मंगवाई जाती थी, जिससे ये बेहद महंगी पड़ती थी। बाद में अमेरिका ने यह दवा देने से मना कर दिया। प्रोफेसर डॉ. विनय जैन ने डीआरडीओ की एक मीटिंग में इस मुद्दे को रखा। उस समय पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम डीआरडीओ के महानिदेशक हुआ करते थे, उन्होंने इस मॉलिक्यूल को भारत में बनाने का सुझाव दिया। कलाम ने प्रो. विनय जैन को डीआरडीओ के डॉक्टर आरबी स्वामी से बात करने के लिए कहा। साल 1995 में इस मॉलिक्यूल पर काम शुरू हुआ। सालभर में ही दवा तैयार कर ली गई, जिसके बाद इसे ड्रग डिपार्टमेंट को पेटेंट के लिए भेजा गया। फरवरी 1998 में इस दवा को पेटेंट भी मिल गया। तब से यह लगातार कैंसर थेरेपी के लिए कारगर साबित हो रही थी। अभी हाल ही में इनमास और डॉक्टर रेड्डी लैब द्वारा इस दवा का कोविड मरीजों के इलाज के लिए भी परीक्षण किया गया, जिसके सार्थक परिणाम सामने आए। उसके बाद इसे अब कोविड-19 के लिए उपयोग करने की अनुमति दी जा चुकी है।

कुलपति ने दी बधाई

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने प्रो. विनय जैन एवं उनके अन्य सहयोगियों को बधाई देते हुए कहा कि कोविड-19 के सीधे उपचार के लिए विकसित की गयी दवा के गर्भ में यह शोध, ऐतिहासिक रूप से वैश्विक महत्त्व रखती है, क्योंकि इसने विश्व को इस महामारी से जूझने के प्रथम उपचार को संस्तुत करने की युगांतरकारी सफलता को हासिल करने का मार्ग प्रशस्त किया है। इस सम्बंध में प्रमुख समासेवी नोरतन रामपुरिया ने जैविभा विश्वविद्यालय को बधाई देते हुए कहा है कि डीआरडीओ द्वारा जारी कोरोना की दवा में जैन विश्व भारती का भी अवदान है। यह अपने आप में सम्पूर्ण तेरापंथ समाज के लिए हर्ष और सम्मान का विषय है। गौरतलब है कि अब तक केवल वैक्सीन को ही कोरोना का बचाव समझा जा रहा था, पर अब डीआरडीओ द्वारा यह पाऊडर के रूप में दवा का आविष्कार अति महत्वपूर्ण खोज है। यह दवा शरीर में ऑक्सीजन की अपेक्षा को कम करने में

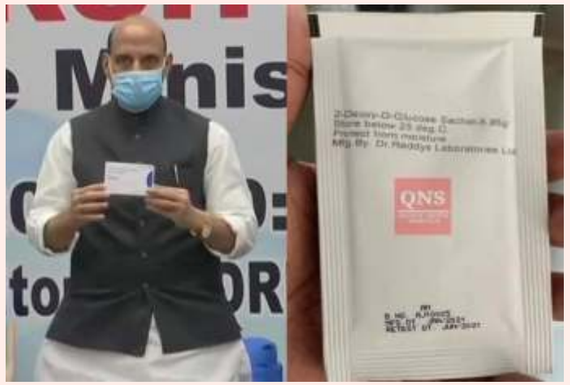

सहायक है तथा इसके आपातकालीन उपयोग को मान्यता मिल चुकी है। इस 2-डीजी नामक दवा का निर्माण डीआरडीओ ने डा. रेड्डी लैब के साथ मिल कर किया है। इस दवा की आपूर्ति प्रतिदिन 10 हजार पैकेटों के साथ दिल्ली में एम्स, एएफएमएस तथा डीआरडीओ के अस्पतालों में शुरू की जा चुकी है। इस दवा को रक्षामन्त्री राजनाथ सिंह व स्वास्थ्य मंत्री डा. हर्शवर्धन ने गत 17 मई को जारी किया था।

दवा की खोज में जुड़े सभी वैज्ञानिकों व संस्थाओं को बधाई

दवा के लॉन्च के अवसर पर केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉक्टर हर्षवर्धन ने कोविड-रोधी दवा टू-डीऑक्सी-डी-ग्लूकोज विकसित करने के लिए डीआरडीओ तथा डॉक्टर रेड्डीज लैबोरेटरीज (डीआरएल) के वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना की है। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह दवा वैज्ञानिकों की एक साल की कड़ी मेहनत का नतीजा है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भी इस दवा को बनाने वाली सभी संस्थाओं और वैज्ञानिकों को बधाई दी है।

संजीवनी के रूप में आई दवाई

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) की यह कोविड की नई दवा '2-डीजी' कोरोना संक्रमण की बढ़ती रफ्तार से त्राहिमाम कर रहे देश भर में किसी ऐसी 'संजीवनी' के रूप में उम्मीद की बड़ी किरण बनकर सामने आई है। इस नई दवा के परीक्षण में जो नतीजे सामने आए हैं, उन्हें देखते हुए माना जा रहा है कि डीआरडीओ की प्रतिष्ठित प्रयोगशाला नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (आइएनएमएएस) द्वारा विकसित की गई '2-डीजी' दवा कोरोना के इलाज में गेमचेंजर साबित हो सकती है। दवा नियामक ड्रग्स कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया (डीजीसीआई) द्वारा डीआरडीओ की बनाई हुई कोरोना की नई दवा 2-डीऑक्सी-डी-ग्लूकोज (2-डीजी) के इस्तेमाल की मंजूरी दी गई है। पाउडर के रूप में इस दवा को एक सैशे में दिया जाएगा, जिसे पानी में घोलकर सेवन करना होगा। संक्रमित कोशिकाओं पर जाकर यह दवा वायरस की वृद्धि को रोकने में प्रभावी पायी गई है।

2-डीजी दवा कोरोना वायरस के सभी वैरिएंट्स प्रभावी

रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन की कोविड-19 की दवा 2-डीजी को लेकर एक अध्ययन किया गया। इस नए अध्ययन में यह बात सामने आई है कि कोविड-19 की दवा 2-डीजी कोरोना वायरस के सभी वैरिएंट्स के खिलाफ कारगर है। एक नए अध्ययन में दावा किया गया है कि रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा विकसित कोरोना वायरस की दवा 2-डियोक्सी-डी-ग्लूकोज (2-डीजी), कोविड-19 के सभी प्रकारों के खिलाफ प्रभावी है और यहां तक कि यह दवा सार्स-सीओवी-2 वायरस के मल्टीप्लिकेशन को भी कम करती है।

प्रारंभिक अध्ययन से यह भी पता चला है कि डीआरडीओ की एंटी-कोविड दवा कोशिकाओं में संक्रमण से प्रेरित साइटोपैथिक प्रभाव (सीपीई) को कम करती है और उन्हें खत्म होने से बचाती है।

मुनिश्री कुमारश्रमण को प्रेक्षाध्यान पर शोध के लिए पी-एच्.डी.

तेरापंथ धर्म संघ के मुनि और जैन विश्वभारती संस्थान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमारश्रमण ने जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय से शोध करके डॉक्टर ऑफ फिलोसोफी (पी-एच्.डी.) की उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की प्रेरणा से "प्रेक्षाध्यान की उपसम्पदा एक प्रसन्न जीवन का मार्ग" विषय पर अपना शोध कार्य सम्पन्न किया। मुनिश्री ने अपना यह शोध संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में सम्पन्न किया है। मुनि कुमारश्रमण विगत कई वर्षों से प्रेक्षाध्यान के शिक्षण-प्रशिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत हैं। उनके इस अनुसंधान से प्रेक्षाध्यान एवं योग के क्षेत्र में अध्ययन एवं शोध के नवीन आयाम प्रस्फुटित होंगे।

मूल्यनिष्ठा के साथ ही रोजगारपरक शिक्षा देने पर जोर
वरिष्ठ शिक्षाशास्त्रियों एवं आचार्यों की बैठक में अनेक अनुशंसाएं

संस्थान में वरिष्ठ शिक्षाशास्त्रियों एवं आचार्यों की एक बैठक कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में वरिष्ठ शिक्षाविद् भगवान महावीर कोटा मुक्त विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. नरेश दाधीच एवं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व समाज संकाय अध्यक्ष एवं राजनीति शास्त्र के विद्वान प्रो. आर. एस. यादव के अलावा संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी तथा कुलपति के विशेष कार्य पदाधिकारी प्रो. नलिन के. शास्त्री ने भाग लिया। बैठक में कुलपति प्रो. दूगड़ ने विचारणीय बिन्दुओं पर चिंतन को व्यक्त करते हुए उनकी आवश्यकता एवं प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला तथा बताया कि एक दीर्घकालिक योजना के बनाए जाने की आवश्यकता है, ताकि युगीन अपेक्षाओं के अनुरूप विश्वविद्यालय की प्रगति यात्रा को नई गति दी जा सके।

प्रो. दाधीच ने नए भारत के विश्वगुरु स्वरूप की अर्हताओं को स्पष्ट करते हुए प्रमाण पत्र, डिप्लोमा तथा डिग्री एवं स्नातकोत्तर स्तर के नए पाठ्यक्रमों के निर्माण एवं उनके प्रवर्तन की समाज एवं देश को आवश्यकता बताई। उन्होंने स्पष्ट किया कि नियमित एवं दूरस्थ दोनों ही अभिक्रमों में ऐसे नवोन्मेषी पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ किया जाना चाहिए, जिनसे विद्यार्थियों को मूल्यनिष्ठा की शिक्षा के साथ-साथ रोजगारपरक शिक्षा भी प्राप्त हो सके। साथ ही उन्होंने ऐसे पाठ्यक्रमों के संचालन के लिए उपर्युक्त तकनीक के समावेशन पर जोर दिया और इंगित किया कि सूचना प्रौद्योगिकी के सम्यक् प्रयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है। प्रो. यादव ने

इस सिलसिले में भारत एवं विदेशों के विश्वविद्यालयों के प्रयोगों के सम्बन्ध में सूचनाएं दीं तथा उन्हें भारतीय परिवेश में उपयोग किए जाने की आवश्यकताओं पर बल दिया। दोनों विशेषज्ञ सदस्यों ने विश्वविद्यालय के मानव प्रबंधन को सशक्त बनाने और संगणक उपयोग की वृद्धि के लिए सुझाव भी दिए। विशेषज्ञ सदस्यों ने समसामयिक पाठ्यक्रमों की पहचान के लिए कुलपति के निर्देशन में विचार मंथन किया। शिक्षाविदों का यह विचार मंथन निरन्तर जारी रखा जाएगा। विदित हो इस उच्च-अधिकारी समिति की अनुशंसाएं विश्वविद्यालय की प्राधिकृत निकायों के सम्मुख विचारार्थ प्रस्तुत की जाएगी और उसके बाद लिए गए निर्णयों को अगले सत्र से अमल में लाया जाएगा।

विदेशी छात्रों व संस्थानों के साथ बढेगी संस्थान की गतिविधियां- कुलपति

अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों के लिए कार्यालय का उद्घाटन

संस्थान में अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों को गति देने हेतु एक कार्यालय का उद्घाटन 25 जनवरी को संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ द्वारा किया गया। इस अवसर पर आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. दूगड़ ने अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों के नौ सूत्रीय कार्यक्रमों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए बताया कि इस कार्यालय के माध्यम से विदेशी छात्रों के स्वागत और समर्थन से सम्बंधित सभी मामलों का समन्वय किया जाएगा। विदेशी छात्रों के बीच प्रवेश प्रक्रिया से सम्बंधित जानकारी का प्रसार किया जाएगा। देश से बाहर होने वाली प्रचार गतिविधियों और ब्रांड निर्माण सम्बंधी अभियान में यह कार्यालय संलग्न रहेगा। विदेशी संस्थानों के साथ सभी सहयोगी गतिविधियों को पूरा करने के लिए यह सिंगल पॉइंट संपर्क रखा जाएगा। विदेशी छात्रों और प्रायोजक एजेंसी के बीच संपर्क निकाय के रूप में यह कार्यालय काम करेगा। सभी प्रकार के मामलों में इस कार्यालय द्वारा विदेशी छात्रों की शिकायतों को दूर करने के लिए भी काम किया जाएगा। साथी छात्रों के साथ नेटवर्किंग की सुविधा की जाएगी। विदेशी छात्रों के भारत में प्रवास को आरामदायक और समृद्ध बनाने के लिए तथा उन्हें नए सांस्कृतिक वातावरण के अनुकूल बनाने के सम्बंध में हर संभव सहायता प्रदान करने का कार्य करेगा। इस अवसर पर उन्होंने कार्यालय की समन्वयक को कार्यों को गति देने के सम्बंध में आवश्यक निर्देश भी प्रदान किए।

विदेशी छात्रों के लिए होंगे सुविधापूर्ण कोर्स

इस अवसर पर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि संस्थान में विगत कई वर्षों से अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों की दिशा में कुछ प्रयत्न होते रहे हैं; किन्तु अब यह केन्द्र खुल जाने से इस दिशा में विशेष गति मिल पाएगी। अहिंसा एवं शान्ति विभाग के अध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने कहा कि अनेकान्त शोधपीठ के अन्तर्गत विदेशी छात्रों के लिए बनाई गई योजनाओं को अब इस कार्यालय के माध्यम से आगे बढ़ाने का काम किया जा सकेगा। अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के इस कार्यालय की समन्वयक प्रगति चौरड़िया ने इन्टरनेशनल अफेयर्स की विस्तृत कार्य योजना प्रस्तुत करते हुए बताया कि कार्यालय के माध्यम से संस्थान की बेवसाइट पर इन्टरनेशनल अफेयर्स की गतिविधियों को प्रकाशित किया जायेगा तथा इस सम्बंध में एक पत्रिका भी लांच की जायेगी। विदेशी छात्रों की सुख-सुविधाओं पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमण्डलों की मेजबानी के लिए सम्भावनाएं तलाशी जायेंगी। विदेशी छात्रों के लिए सर्टिफिकेट, स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम भी शुरु किये जायेंगे। कुलसचिव रमेश मेहता ने इस अवसर शुभकामना प्रस्तुत करते हुए सबके सहयोग से कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये प्रेरित किया।

संस्थान को मिलेगा अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. नलिन के. शास्त्री ने कहा कि संस्थान में अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों के लिए पहले से ही काम होता रहा है; किन्तु संस्थान इस दिशा में अब बड़े कदम बढायेगा। एक विस्तृत कार्य योजना के साथ समयबद्ध कार्य किये जायेंगे और तदनुरूप इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित किये जायेंगे। इससे इस संस्थान को अब अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त हो सकेगा। प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रद्युम्न सिंह, डॉ. विकास शर्मा आदि ने इस संदर्भ में कुछ सुझाव दिये। कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. अरिहन्त जैन ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। अन्त में कार्यक्रम समन्वयक चौरड़िया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम संयोजना में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की सहायक आचार्य आयुषी शर्मा ने सहयोग प्रदान किया।

विश्व पर्यावरण दिवस का ऑनलाईन आयोजन

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार आजादी के अमृत महोत्सव अभियान के तहत संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण में विश्व पर्यावरण दिवस कार्यक्रम का ऑनलाइन आयोजन 5 जून को किया गया। इस कार्यक्रम में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. के. एन. व्यास मुख्य अतिथि रहे तथा दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. के. एन. व्यास ने बताया कि इस सृष्टि के जीव प्रकृति पर निर्भर है। पारिस्थितिकी तंत्र को शुद्ध रखना अति आवश्यक है और इस हेतु इन्होंने अनेक पक्षों पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता समाज कार्य विभाग की सहायक आचार्या डॉ. पुष्पा मिश्रा ने समाज का मुख्य दायित्व पर्यावरण को शुद्ध रखना बताया। अहिंसा और शांति विभाग की सहायक आचार्या डॉ. लिपि दूगड़ ने पर्यावरण दिवस मनाए जाने के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट किया। डॉ. आभा सिह ने भी विचार व्यक्त किए। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि इस जगत् का प्रत्येक प्राणी प्रकृति और पर्यावरण पर पूर्णतः आश्रित है। कार्यक्रम के आरंभ में आयोजन समिति के सदस्य तथा योग तथा जीवन विज्ञान विभाग के डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. प्रगति भटनागर ने किया और अंत में डॉ. बलबीर सिंह ने आभार ज्ञापित किया।

पराक्रम दिवस पर ऑनलाईन कार्यक्रम आयोजित

संस्थान में 23 जनवरी को नेताजी सुभाषचंद्र बोस की 125वीं जन्म जयंती को 'पराक्रम दिवस' के रूप में ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित करके मनाया गया। कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने नेताजी के जीवन से मिलने वाली ग्रहणीय शिक्षाओं से अवगत कराया। प्रो. अनिल धर, प्रो. बी. एल. जैन ने उनकी कीर्ति के बारे में बताया। छात्राध्यापिका रुबीना, शोभा स्वामी और नेहा पारीक ने भी अपने भावों को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. अमिता जैन थी। डॉ. विनोद सियाग ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

विश्वविद्यालय देख अभिभूत हुए जैन आचार्यश्री विजय धुरंधर सूरीश्वर

आचार्यश्री ने सहमुनियों के साथ जैन विश्व भारती, विश्वविद्यालय, ग्रंथागार का अवलोकन किया, सराहा

जैन आचार्य गच्छाधिपति श्रुतभास्कर आचार्यश्रीमद् विजय धर्मधुरन्धर सुरीश्वर महाराज का अपने सहवर्ती संतों के साथ 26 मई को अपने अम्बाला विहार के क्रम में जैन विश्व भारती में एक दिवसीय प्रवास के दौरान आचार्य सूरीश्वर महाराज ने गणाधिपति तुलसी के जन्मस्थान का भ्रमण किया एवं जैन विश्व भारती में बने तपोस्थल आचार्य तुलसी स्मारक पर पधारे। जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उन्हें विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों का अवलोकन करवाया एवं समस्त गतिविधियों व पाठ्यक्रमों की जानकारी दी। आचार्य श्री सूरीश्वर महाराज विश्वविद्यालय देखकर अभिभूत हुए। उन्होंने यहां की व्यवस्थाओं, सुविधाओं, पाठ्यक्रमों आदि की सराहना करते हुए कहा कि जैन धर्म और संस्कृति के उत्थान एवं प्रसार के लिए यहां बहुत ही बढिया कार्य किया जा रहा है।

उन्होंने यहां तुलसी कला दीर्घा का अवलोकन करते हुए वहां प्रतिष्ठित विभिन्न सामग्रियों, चित्रों आदि की विस्तृत जानकारी प्राप्त की एवं उन्हें सराहनीय बताया। आचार्यश्री एवं सहवर्ती मुनिवृंदों ने प्रकाशित साहित्य एवं आगम साहित्य का अवलोकन भी किया। आगम एवं साहित्य के संदर्भ में उन्होंने प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा एवं समणी संगीतप्रज्ञा के साथ चर्चा एवं विचार विमर्श किया। उन्होंने जैन विश्व भारती के आगम एवं साहित्य प्रकाशन संबंधी कार्य को महत्वपूर्ण बताया एवं इस स्थान को सबसे अच्छा बताया। आचार्यजी एवं मुनिवृंद ने इस अवसर पर जैन विश्व भारती के विस्तृत रमणीय परिसर, विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय वर्द्धमान ग्रंथागार आदि का भी अवलोकन किया। इस अवसर पर उनकी अगवानी में प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, महेन्द्र बाफना, डा. विजयश्री शर्मा, संजय बोथरा, दिनेश सोनी, जोगेन्द्र सिंह एवं श्रावकजन उपस्थित रहे।

संतों के निरन्तर प्रवास से रहती है परिसर में आध्यात्मिक ऊर्जा- कुलपति

अभिनन्दन एवं मंगलभावना समारोह आयोजित

संस्थान के सेमिनार हॉल में 1 मार्च को आयोजित अभिनन्दन एवं मंगलभावना समारोह में मुनिश्री अमृत कुमार ने कहा है कि संत मानव मात्र का कल्याण करते हैं। वे जहां भी रहते हैं, विचरते हैं, जन-जन को अपने प्रवचन व प्रेरणा से सद्मार्ग दिखाते हैं। लाडनूं में वृद्ध साधु-साध्वियों का सेवाकेन्द्र है, मुनिश्री सुमति कुमार ने एक वर्ष तक यहां सेवाकार्य करके साधुवृद्धों को चितसमाधि पहुंचाई।

मुनिश्री सुमति कुमार ने अपने उद्बोधन में एक साल के अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि साधु हमेशा विचरण करते हैं और इसी में उनका उद्देश्य पूरा होता है। कार्यक्रम में मुनिश्री देवार्य कुमार, मुनि तन्मय कुमार व मुनि उपशम कुमार ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने मुनिश्री सुमति कुमार के साथ बीते एक साल के संस्मरणों को प्रस्तुत किया तथा कहा कि यह विश्वविद्यालय और समूचा जैन विश्व भारती परिसर संतों के निरन्तर प्रवास के कारण आध्यात्मिक ऊर्जाओं से भरपूर रहता है। उनकी कृपा से ही यहां का वातावरण सदैव पावन बना रहता है। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, जैन मनीषी डॉ. शान्ता जैन, प्रो. नलिन के. शास्त्री, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल जैन, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सुनीता बैद आदि ने भी अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्रम के प्रारम्भ में महिला मंडल एवं कन्या मंडल की ओर से महिलाओं ने मंगलगान व गीतिका प्रस्तुत किए। तेरापंथी सभा के मंत्री राजेन्द खटेड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया।

दायित्व के प्रति समर्पण के साथ नियमितता व समयबद्धता जरूरी

समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष की सेवानिवृत्ति पर मंगलभावना समारोह

संस्थान के कार्यवाहक कुलपति प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा है कि अगर व्यक्ति अपने कर्तव्य से प्रेम रखता है, तो उसके सामने आने वाली समस्त चुनौतियां स्वतः ही हल होती जाती हैं। दायित्वों के प्रति समर्पण के साथ नियमितता और समयबद्धता दोनों का होना ही श्रेष्ठ गुण होता है। वे 1 मार्च को यहां समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बिजेन्द्र प्रधान के सेवानिवृत्ति पर आयोजित मंगलभावना समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर डॉ. बिजेन्द्र प्रधान और उनकी पत्नी को शॉल ओढ़ा कर एवं प्रतीक चिह्न भेंट करके सम्मानित किया गया। डॉ. प्रधान ने अपने सम्बोधन में अपने अनुभवों और सहकर्मियों के साथ पारस्परिक सम्बंधों के बारे में बताते हुए कहा कि व्यक्ति को जीवन भर सीखने की ललक रखनी चाहिए। कार्यक्रम में डॉ. विकास शर्मा, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, आर.के. जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी व प्रो. अनिल धर ने डॉ. प्रधान के भावी जीवन के लिए शुभकामनाएं देते हुए उनकी कार्यशैली की प्रशंसा की। कार्यक्रम के अंत में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

डॉ. पुष्पा मिश्रा को 'नारी रत्न सम्मान'

के.टी.सी. फाउंडेशन सुजानगढ़ द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 9 मार्च को आयोजित सम्मान समारोह में संस्थान के समाज कार्य विभाग की सहायक आचार्या डॉ. पुष्पा मिश्रा को लाडनूं व आस-पास के गांवों में महिला शिक्षा को प्रोत्साहन देने, बालिकाओं एवं महिलाओं को राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा से जोड़ने के कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए ''नारी रत्न सम्मान'' प्रदान किया गया।

उन्हें यह के.टी.सी. फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राज खान, कार्यक्रम की अध्यक्ष नगर परिषद् सभापति नीलोफर गौरी, अति विशिष्ट अतिथि उपसभापति अमित मारोठिया, गोपालपुरा सरपंच सविता राठी, सेलिब्रिटी गेस्ट माहिया दाधीच, महिला उद्यमी सरिता चौधरी, एवरग्रीन पब्लिक स्कूल के डायरेक्टर रतन सेन व माणक सराफ आदि अतिथियों के साथ-साथ केटीसी फाउंडेशन की स्थानीय अध्यक्ष सुनीता रावतानी द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा, सुमनेश शर्मा, पवन सोनी, सरला पांडे, मधु बागरेचा, मोनिका शर्मा, राज पाटनी, मारवाड़ी युवा मंच शाखा सखियां, गार्गी ग्रुप आदि उपस्थित थे।

स्वस्थ लोकतंत्र की रक्षा जरूरी

संस्थान में 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने झंडारोहण किया। एनसीसी की छात्राओं ने परेड की व सलामी प्रदान की। कार्यक्रम में राष्ट्रभक्ति गीत, कविताएं व विचार प्रकट किए गए। कुलपति प्रो. दूगड़ ने अपने सम्बोधन में गणतंत्र के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा स्वस्थ लोकतंत्र की रक्षा को आवश्यकता बताया। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. अनिल धर आदि ने स्वतंत्रता से लोकतंत्र तक के सफर के बारे में बताया। अंत में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने किया।

बीमा निदेशक ने की संस्थान की सराहना

राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग के निदेशक हरफूल सिंह यादव ने यहां जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) का दौरा किया और यहां के समस्त विभागों, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, कम्प्यूटर लैब, विज्ञान प्रयोगशालाओं, डिजीटल स्टमडियो आदि का अवलोकन किया। उन्होंने अवलोकन के बाद सराहना करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के परिसर सहित सभी स्थानों पर स्वच्छता विशेष रूप से प्रशंसनीय है। उन्होंने बताया कि वे राजस्थान विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार रह चुके हैं, लेकिन यहां की सभी व्यवस्थायें उन्हें बहुत अच्छी लगी हैं। इस अवसर पर जैविभा विश्वविद्यालय की ओर से उनका स्वागत किया गया। उन्हें रजिस्ट्रार रमेश कुमार मेहता और दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने पुस्तकें और प्रतीक चिह्न प्रदान किया गया। इस मौके पर प्रसिद्ध व्यवसायी मूलचंद नाहर बैंगलोर और अणुविभा के उपाध्यक्ष युवक रत्न सम्मानित अविनाश नाहर भी मौजूद रहे।

भगवान् महावीर के सिद्धांतों से वैश्विक समस्याओं का समाधान संभव

महावीर जयंती और दर्शन दिवस पर राष्ट्रीय वेबिनार

महावीर जयंती के अवसर पर 24 अप्रेल को दर्शन दिवस का आयोजन जैन विश्वभारती संस्थान के जैनविद्या तथा तुलनात्मक धर्म एवं दर्शन विभाग द्वारा किया गया, जिसमें आधुनिक युग में भगवान महावीर के दर्शन की प्रासंगिकता विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण में आयोजित इस वेबिनार के मुख्य अतिथि, भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. आर.सी. सिन्हा थे। महावीर दर्शन के विभिन्न आयामों पर इस राष्ट्रीय वेबिनार में देश के मूर्धन्य विद्वानों के व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। मुख्य अतिथि प्रो. रमेश चन्द्र सिन्हा ने आधुनिक दार्शनिक शब्दावली के परिप्रेक्ष्य में आधुनिकतावाद और उत्तर आधुनिकतावाद का उल्लेख करते हुए भगवान महावीर के सिद्धांतों को सार्वकालिक बताया।

पाश्चात्य संस्कृति पर भी है महावीर का प्रभाव

संस्थान के संस्थापक-कुलपति प्रो. महावीरराज गेलड़ा ने कहा कि व्यक्ति जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। इस उद्घोष से महावीर की चिंतन धारा व्यापक बनी है। श्रीलाल बहादुर शास्त्री केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के जैन दर्शन विभाग के प्रो. अनेकांत कुमार जैन ने ''भगवान महावीर का विभिन्न संस्कृतियों पर प्रभाव'' विषय पर कहा कि महावीर का दर्शन सार्वभौमिक दर्शन हैं, जिसके सिद्धांत किसी धर्म विशेष से नहीं अपितु प्राणी मात्र के कल्याण के लिए है। जे.एन. व्यास यूनिवर्सिटी जोधपुर के संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. धर्मचंद जैन ने कहा कि अनेकांत विचार ही जैन दर्शन, धर्म और संस्कृति का प्राण है।

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने अहिंसा दर्शन की प्रासंगिकता को बताते हुए कहा कि सच्ची अहिंसा वह है, जहां मानव व मानव के बीच भेदभाव न हो, परस्पर हृदय और हृदय, शब्द और शब्द, भावना और भावना के बीच समन्वय हो। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुमुक्षु बहनों की महावीर स्तुति से किया गया। विभागाध्यक्षा प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने कहा कि भगवान् महावीर के जन्म कल्याणक की सच्ची सार्थकता तभी है, जब उनके दर्शन को अपनाकर ''सर्व जन हिताय, सर्व जन सुखाय'' सिद्धांत को हम सभी आत्मसात् करेंगे। राष्ट्रीय वेबिनार के समापन से पूर्व संयोजक डॉ. अरिहन्त कुमार जैन ने जैन दर्शन की विभिन्न अवधारणाओं पर जैन विश्व भारती द्वारा किए गए 14 मोनोग्राफ्स सीरीज का परिचय एवं महत्त्व बताया। अंत में समणी अमल प्रज्ञा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। वेबिनार में 70 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

वेदांत है पारम्परिक रूप से व्यावहारिक दर्शन- प्रो. तिवाड़ी

विश्व दर्शन दिवस पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

संस्थान के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग के तत्त्वावधान में विश्व दर्शन दिवस के अवसर पर 6 मार्च को ''समकालीन भारतीय दार्शनिकों का चिंतन'' विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण में आयोजित इस वेबिनार में मुख्य अतिथि इंडियन कौंसिल ऑफ फिलोसोफिकल रिसर्च नई दिल्ली के प्रो. रमेश चन्द्र सिन्हा ने कहा कि यह आक्षेप लगाना गलत है कि समकालीन भारत में कोई दार्शनिक नहीं हुआ। उन्होंने कृष्णमूर्ति, अरविंद घोष, केसी भट्टाचार्य, विवेकानन्द आदि के नामों का उल्लेख करते हुए कहा कि केवल सिस्टम की शुरुआत करने वाले ही दार्शनिक नहीं होते, बल्कि एक अवधारणा को दूसरी अवधारणा से जोड़ने वाले भी दार्शनिक ही होते हैं। इन दार्शनिकों ने प्राचीन के प्रति आस्थावान रहते हुए नये स्वरूप को प्रस्तुत किया।

विवेकानन्द अद्वैत और शाक्त परम्परा से प्रभावित

प्रयागराज के इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के अध्यक्ष रह चुके प्रो. जटाशंकर तिवाड़ी ने विवेकानन्द के व्यावहारिक वेदांत पर बोलते हुए कहा कि समकालीन भारत में जितना भी दार्शनिक चिंतन हुआ है, वह वेदांत के इर्दगिर्द ही हुआ है। इसका शंखनाद करने वाले स्वामी विवेकानन्द थे। वेदांत सम्प्रदाय तक बना, जिसमें उपनिषद, ब्रह्मसूत्र व भगवद्गीता ग्रंथ शामिल हैं। विवेकानन्द पर रामकृष्ण के अद्वैत और बंगाल की शाक्त परम्परा का प्रभाव देखने को मिलता है। वेदांत का पारम्परिक रूप व्यावहारिक ही है और यहां वेदांत को जीवन व्यवहार में उतारने वाले लोग रहे हैं। गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद के दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष दिलीप चारण ने केसी भट्टाचार्य पर बोलते हुये कहा कि भारतीय चिंतन और पश्चिम के दर्शन को एक करके देखने की जरूरत है। हम पश्चिम के तर्क बुद्धिवाद के कारण अपनी आत्मा की अमूल्य खोज की स्थापना को नकार नहीं सकते। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. प्रद्युम्न शाह ने पं. दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन पर विचार रखे और कहा कि पं. दीनदयाल का एकात्म मानववाद दो विचारधाराओं के समन्वय का चिंतन है। यह प्रवृत्ति व निवृत्ति का समन्वय है। उन्होंने अनेकांत विचार और आचार्य तुलसी के अणुव्रत दर्शन की पं. दीनदयाल के एकात्म मानव दर्शन से तुलना भी प्रस्तुत की।

राग और विराग का सामञ्जस्य जरूरी

राजस्थान विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरविन्द विक्रम सिंह ने बताया कि समकालीन विचारकों ने दो प्रकार के दार्शनिक विचार दिए, इनमें सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक विचार हैं। अरविन्द घोष में दोनों चिंतन पाए जाते हैं, जो अद्वैत दृष्टि का विकसित रूप है। भारतीय परम्परा के जीवन के लक्ष्य प्राप्ति में योग चतुष्टय से निवृत्ति-मार्गी अधिक है। राग और विराग दोनों का सामन्जस्य जरूरी है। इनमें अन्तर्विरोध अवश्य हैं, पर जीवन की लीला इसी तरह से चलती है। दोनों धाराएं भारतीय चिंतन में विकसित हुई- भौतिकवादी भी और आध्यात्मिक विचारधारा भी। कार्यक्रम का प्रारम्भ अरिहंत जैन के मंगलाचरण से किया गया। जैविभा विश्वविद्यालय के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने स्वागत वक्तव्य दिया। अंत में डा. समणी अमल प्रज्ञा ने आभार ज्ञापित किया। वेबिनार का संचालन दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने किया।

राष्ट्रहित के पुरोधा आचार्य महाप्रज्ञ को 'भारत रत्न' से विभूषित किया जाए

महाप्रयाण दिवस पर राष्ट्रीय वेबिनार में विद्वानों की अपील

तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्य एवं प्रख्यात दार्शनिक आचार्य महाप्रज्ञ के 12वें महाप्रयाण दिवस के अवसर पर 7 मई को जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षकत्व में आयोजित इस राष्ट्रीय वेबिनार में देश की ख्यातिलब्ध हस्तियों ने हिस्सा लिया और आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति अपनी भावांजली व्यक्त की। वेबिनार में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के जैनोलोजी के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. फूलचंद जैन प्रेमी ने अपने वक्तव्य में आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व की विशेषताओं व उनकी कृतियों के बारे में प्रकाश डालते हुए उनके विविध अवदानों का उल्लेख किया। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ को विश्व स्तर का दार्शनिक एवं संत पुरुष बताते हुए उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किए जाने की अपील की, साथ ही प्रो. जैन ने आचार्य महाप्रज्ञ की जीवनी और योगदान को पाठ्यपुस्तकों में शामिल करने का सुझाव प्रस्तुत किया।

कोरोना महामारी में उनके संदेश प्रासंगिक

जयपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ मीडिया स्टडीज के निदेशक प्रो. के.के. रत्तू ने आचार्य महाप्रज्ञ के संदेश 'निज पर शासन फिर अनुशासन' को कोरोना महामारी जैसी कठिन परिस्थितियों में प्रासंगिक बताते हुए कहा कि यह संदेश कोरोना वायरस की महामारी से मुक्ति के लिए अमोघ साधन है। जैविभा के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने आचार्य महाप्रज्ञ को संत, दार्शनिक, कवि, अर्थशास्त्री आदि उपमाएं दीं और बहुमुखी विशाल साहित्य की रचना के बारे में बताया। अणुव्रत महासमिति के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने आचार्य महाप्रज्ञ के संस्मरणों को प्रस्तुत करते हुए हर व्यक्ति के लिए सरल, समर्पित और विनम्र बनकर महाप्रज्ञ के चिंतन को आत्मसात् करने की आवश्यकता बताई तथा कहा कि हमें महाप्रज्ञ के साहित्य को समाज में जन-जन तक पहुंचाना चाहिए। वेबिनार में डॉ. अनेकांत कुमार जैन नई दिल्ली ने महाप्रज्ञ रचित प्रसिद्ध कविता ''सहज सरल जीवन की पोथी'' का पाठ किया। उदयपुर विश्वविद्यालय के प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने भी अपनी विनयांजलि अर्पित की। प्रारंभ में संगोष्ठी-संयोजक डॉ. अरिहंत कुमार जैन ने वेबिनार की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। वेबिनार निदेशिका प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। वेबिनार में विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्वानों एवं शोध छात्रों समेत लगभग 80 से अधिक लोगों की उपस्थिति रही।

शंकराचार्य ने वेदांत दर्शन से सभी धर्म सम्प्रदायों के बीच सामञ्जस्य स्थापना का मार्ग दिया- स्वामी भावात्मानन्द

आदि शंकराचार्य जयंती पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

भारतीय दर्शन दिवस एवं आदि शंकराचार्य की 1234वीं जयंती के अवसर पर 17 मई को भारतीय दर्शन शोध परिषद के सौजन्य से यहां संस्थान के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण एवं विभागाध्यक्षा प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा के निर्देशन में आयोजित इस वेबिनार में रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम के सचिव भावात्मानन्द ने कहा कि शंकराचार्य ने मात्र 32 वर्ष की अल्प अवधि में ही भारत का दर्शन दुनिया को दे दिया। उनका अद्वैत दर्शन ही आज भारत का दर्शन माना जाता है। उन्होंने बताया कि उनके समय में शैव, वैष्णव आदि 65 सम्प्रदाय मौजूद थे। जैन और बौद्ध धर्म भी प्रमुख थे। शंकराचार्य ने वेदांत दर्शन द्वारा सभी धर्म सम्प्रदायों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का मार्ग दिया था। अद्वैत दर्शन किसी सम्प्रदाय का विरोधी नहीं है, बल्कि सभी मतों में समन्वय लाना और उन्हें उत्कृष्टता प्रदान करने वाला दर्शन है। उन्होंने बताया कि वेदांत दर्शन वैदिक धर्म से ही निकला हुआ है। वेदों में इसके सूत्र मौजूद हैं।

भेदभाव मिटाने का माध्यम है अद्वैत

वेबिनार के मुख्य अतिथि भारतीय दर्शन शोध परिषद के अध्यक्ष प्रो. रमेशचंद्र सिन्हा ने कहा कि मनुष्य-मनुष्य के बीच भेदभाव मिटाने और शोषण को समाप्त करने में शंकराचार्य का अद्वैत दर्शन सक्षम है। अद्वैत या ब्रह्मवाद शंकराचार्य का महत्त्वपूर्ण अवदान है। शंकराचार्य का दर्शन क्लिष्ट और अमूर्त है, लेकिन उसे ही भारतीय दर्शन के रूप में मान्यता है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो. देवेन्द्र नाथ तिवाड़ी ने शंकराचार्य द्वारा स्थापित चारों मठों की विशेषताएं बताईं तथा उनके मायावाद को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि मायावाद का लक्ष्य केवल सत्य तक पहुंचना है। यह बुद्धिकौशल से, अर्थवाद से सत्य तक ले जाता है। मायावाद की अच्छाई यह है कि इससे दुःखों को दूर किया जा सकता है। दूसरों के प्रति व्यवहार, कर्म सिद्धांत, जीवन मुक्ति, धर्म-कर्म, विनोद, नैतिकता आदि की प्रतिष्ठा मायावाद से ही है।

प्राकृत टाइम्स इंटरनेशनल न्यूज लेटर का विमोचन

वेबिनार के समन्वयक जैविभा के दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने प्रारम्भ में विषयवस्तु पर प्रकाश डालते हुए आदि शंकराचार्य को महायोगी बताया तथा उनकी सांसारिक जीवन यात्रा के बारे में बताया। उन्होंने शंकराचार्य की तर्कशक्ति का विवरण प्रस्तुत किया। रोहिलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली के प्रो. राज्जन कुमार ने भी शंकराचार्य के अद्वैतवाद पर अपने विचार व्यक्त किए। वेबिनार में डॉ. अरिहंत जैन ने प्राकृत टाईम्स इंटरनेशनल ई-न्यूज लेटर का विमोचन करवाया और पत्र के बारे में विवरण प्रस्तुत किया।

पांच दिवसीय योग एवं जीवन विज्ञान कार्यशाला

जीवन में माधुर्य भर सकता है योग - डॉ. चौधरी

हॉगकोंग, सिंगापुर, मुम्बई, पंजाब से सम्मिलित योग विशेषज्ञों ने दिया प्रशिक्षण

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के तत्त्वावधान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला में योगासंजीवनी इंटरनेशनल के संस्थापक डॉ. सुरेन्द्र चौधरी ने कहा कि योग जीवन के हर क्षेत्र में हस्तक्षेप करके उसे सुन्दर और माधुर्यपूर्ण बनाने में सक्षम है। इसके लिए हमें योग को जीवन के हर क्षेत्र में प्रतिष्ठापित करना होगा। उन्होंने अलग-अलग क्षेत्र में योग की भूमिका और उसके लिए कार्य करने की विधियों पर प्रकाश डाला। होंगकोंग के योगा प्रोफेसनल एवं मोटिवेशन गुरू केपी योगा वैलनेस के डॉ. कंवरपाल सिंह, पंजाब से योगपैथी जलंधर की संस्थापक अनुप्रिया एवं योगगुरु होलिस्टिक हेल्थकेयर फाउण्डेशन गुरुकुल के संसीपक एवं प्राकृतिक चिकित्सक व लेखक डॉ. मोहन कार्की आदि ने योग सम्बंधी विद्याओं पर प्रशिक्षण प्रदान किया।

सिद्धि पारीक की जीवनोपयोगी योगविधा

कार्यशाला में सर्वयोगा स्टूडियो मुम्बई की सिद्धि पारीक ने योग सम्बंधी विभिन्न योग पद्धतियों के सम्बंध में बताते हुए जीवनोपयोगी क्रियाओं व अभ्यासों के सम्बंध में जानकारी प्रदान की। ज्ञातव्य रहे कि सिद्धि पारीक ने यहां जैन विश्व भारती संस्थान से ही योग और जीवन विज्ञान में स्नातकोत्तर किया था। वे वर्तमान में मुंबई में सर्व योग स्टूडियो में पिछले दो साल से मलाइका अरोड़ा के साथ काम कर रही है। इस स्टुडियो द्वारा वे योग के विभिन्न रूपों का प्रशिक्षण प्रदान कर रही हैं। वे योग के 25 रूपों, तीव्रता के 3 स्तरों और 9 लक्ष्य चुनने का अवसर प्रदान करके शिक्षण के तहत लक्ष्य आधारित योग का सर्वसुलभ पाठ्यक्रम संचालित कर रही हैं। उनकी 'सर्व एप्प' के लिए योग की एक वीडियो श्रृंखला डिजाइन और शूट की गई है।

विश्वव्यापी योग विद्या है भारत की विश्व को देन

सिंगापुर में कार्यरत सुजाता चौलघे, जो वहां पर प्रज्ञायोग एंड वैलनेस प्राईवेट लि. सिंगापुर की संस्थापक-निर्देशक है, ने भी कार्यशाला में जीवन में बदलाव लाने वाली योग की विधाओं के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि भारत से प्रवर्तित योग की विद्या आज पूरे विश्व में व्याप्त हो चुकी है और इसमें भारतीय योग-मनीषियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने योग के प्रसार पर पूरा जोर देना मानवता के लिए अवदान बताया। ज्ञातव्य है कि सुजाता चौलघे भी जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय से योग की विद्यार्थी रह चुकी थी।

विज्ञान ने योग को सिद्ध किया

कार्यशाला का शुभारम्भ करते हुए प्रो. समणी मल्लिप्रज्ञा ने कहा कि योग अपनी वैज्ञानिकता को भी सिद्ध कर चुका है। अब आवश्यकता इस बात की है कि हम योग के अनुभव और विज्ञान के साथ उनके सामंजस्य को जन-जन तक पहुंचाएं। सहायक आचार्य डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने प्रारम्भ में विषयवस्तु एवं कार्यशाला के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

शुभारंभ सत्र के अंत में डॉ. युवराज सिंह खांगारोत ने आभार ज्ञापित किया। प्रो. समणी मल्लीप्रज्ञा व प्रो. समणी श्रेयशप्रा के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यशाला की संयोजक समिति के निर्देशक डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत एवं सदस्य डा. अशोक भास्कर, डा. युवराजसिंह खांगारोत, डा. हेमलता जोशी व डा. विनोद सियाग सहित प्रो. बीएल जैन आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अशोक भास्कर ने किया।

प्राणिक हीलिंग शिविर में करवाया आभामंडल व ऊर्जा का अभ्यास

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के अन्तर्गत तीन दिवसीय (11-13 मार्च) प्राणिक हीलिंग के बेसिक कोर्स का शिविर आयोजित किया गया। शिविर में जीएमसीकेएस प्राणिक हीलिंग ट्रस्ट राजस्थान की ट्रस्टी एवं प्राणिक हीलिंग इंस्ट्रक्टर रेणु चिंडालिया ने शिविरार्थी विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देते हुए ओरा और ओरा देखने की विधि, ऊर्जा को महसूस करने की विधि, आभामंडल द्वारा रोग की पहचान आदि के बारे में बताया और प्रायोगिक तौर पर ओरा और ऊर्जा का अनुभव करवाया। शिविर में डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, डॉ. अशोक भास्कर, डॉ. हेमलता जोशी, डॉ. विनोद कस्वां एवं 40 विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कोविड से बढ़े भय, हताशा, चिंता और मनोरोग का निराकरण सामाजिक स्तर पर जरूरी- डॉ. आई.डी. गुप्ता

कोविड के प्रभाव से बढ़ते मनोरोगों और उनके निराकरण पर राष्ट्रीय वेबिनार

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के तत्त्वावधान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में एवं विभागाध्यक्षा समणी मल्लीप्रज्ञा की अध्यक्षता में 'योगा एण्ड काउंसलिंग फॉर मेंटल हेल्थ एण्ड वेल बींग इन प्रजेंट सिनेरीयो' विषय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन 6 जून को किया गया। वेबिनार में विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों ने अपने-अपने क्षेत्र से सम्बंधित प्रभावी वक्तव्य प्रस्तुत किए। एसएमएस मेडिकल कॉलेज जयपुर के वरिष्ठ मनोरोग चिकित्सक डॉ. आईडी गुप्ता ने प्रमुख वक्ता के रूप में बताया कि वर्तमान समय कोविड-19 के कारण लोगों में भय, हताशा, चिंता, परेशानियों से भरा रहा है। इसमें केवल कोरोना पीड़ित ही नहीं, उनके परिजन, रोजी बंद होने से परेशान लोगों, विद्यार्थियों आदि सभी के सामने मानसिक विसंगतियां पैदा हुई हैं। इनका मुकाबला करने के लिए सामाजिक स्तर पर सबको सजग होना होगा और सामूहिक व्यवहार की नीति अपनानी आवश्यक है। उन्होंने इस प्रकार की विभिन्न मनो-परेशानियों के बारे में बताते हुए उनके निराकरण के बारे में भी बताया।

बिलासपुर छतीसगढ़ के केन्द्रीय विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग की प्रो. प्रतिभा मिश्रा ने विशिष्ट वक्ता के रूप में कोरोना महामारी के सभी पहलुओं की विस्तारपूर्वक व्याख्या की और उससे होने वाले प्रभावों को सामाजिक स्तर पर निपटने के उपायों पर चर्चा की। हिमाचल प्रदेश योगा एंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रो. जेडी शर्मा योग विशेषज्ञ ने कहा कि कोरोना और उससे उत्पन्न अन्य बीमारियों का इलाज किसी भी पैथी से करवाया जाए, उसका उद्देश्य रोगी को शारीरिक, मानसिक दोनों तरफ सेवायें प्रदान करना ही है। उन्होंने रोग से मुक्त होने के पश्चात् मानसिक परेशानियों के इलाज में मनोरोगी के परिवार व समाज की महती भूमिका के बारे में भी रेखांकित किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ अशोक भास्कर ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए बताया कि इस वेबीनार के माध्यम से विद्वान वक्ताओं ने इस महामारी के संदर्भ में परिवार व समाज की जिम्मेदारी पर प्रकाश डाला है, जो सभी के लिए लाभप्रद है तथा इस महामारी से लड़ने के लिए एक नवीन दिशा निर्धारित करने में अहम भूमिका निभाएगा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने किया।

महिलाओं की स्थिति में सुधार के आंदोलनों को सम्बल मिले- प्रो. अश्विनी कुमार

जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली के समाज कार्य विभाग के आचार्य डॉ. अश्विनी कुमार ने कहा है कि वैश्विक परिदृश्य में महिलाओं के साथ आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर काफी विषमताएं रही हैं, जिन्हें दूर करना ही महिला दिवस मनाए जाने की सफलता होगी। वे संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्त्वावधान में 9 मार्च को आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने नारी आंदोलनों को एकांगी बताते हुए कहा कि सर्वांगीण सोच के साथ महिलाओं की स्थिति में सुधार के प्रयासों को सम्बल मिलना चाहिए। लखनऊ विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग के प्रोफेसर अनूप कुमार भारतीय ने महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन के लिए मन, मस्तिष्क, व्यवहार और मनोवृत्ति में परिवर्तन लाने की आवश्यकता बताई।

खुजा बुलंदशहर की वरिष्ठ सहायक आचार्या डॉ. गीता सिंह ने सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में महिलाओं के प्रति भेदभाव एवं सामाजीकरण की भिन्नता से उबारने को महत्त्वपूर्ण आवश्यकता बताया और कहा कि महिलाओं के प्रति सभ्य व्यवहार किसी पूजा से कम नहीं होता है। प्रारम्भ में विभागाध्यक्ष डॉ. बिजेन्द्र प्रधान ने सभी अतिथियों व वक्ताओं का स्वागत किया। अंत में सहायक आचार्य डॉ. विकास शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। वेबिनार का संचालन डॉ. पुष्पा मिश्रा ने किया।

'सामाजिक उत्थान में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का योगदान' पर वेबिनार आयोजित

संस्थान के समाज कार्य विभाग द्वारा डॉ. भीमराव अंबेडकर की जन्म जयंती के अवसर पर 13 अप्रैल को एक वेबिनार का आयोजन किया गया। 'सामाजिक उत्थान में डॉ. भीमराव अंबेडकर का योगदान' विषय पर आयोजित इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय बलिया के पूर्व कुलपति प्रो. योगेंद्र सिंह ने कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर ने सामाजिक उत्थान में शोषित और दलितों के हितों के साथ उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाने के प्रयास किए थे। डॉ. अंबेडकर का भारतीय संविधान के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने समानता, स्वतंत्रता तथा सामाजिक न्याय की बात कही। कार्यक्रम में लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. एएमसी ने कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर ने समाज के वंचित वर्गों के उत्थान के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। आरक्षण व्यवस्था, सामाजिक न्याय की व्यवस्था, अंतरजातीय विवाह, जाति प्रथा में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के प्रयासों में डॉ. भीमराव अंबेडकर का अतुलनीय योगदान रहा था। कार्यक्रम के प्रारंभ में समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बिजेंद्र प्रधान ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पुष्पा मिश्रा ने किया तथा अंत में आभार ज्ञापन डॉ. विकास शर्मा ने किया।

दूरस्थ शिक्षा मूक्स व ओडीएल पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के तत्त्वावधान में मूक्स शिक्षा पद्धति पर 16 फरवरी को एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में आयोजित इस वेबिनार में मुख्य वक्ता अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रो. शम्भुनाथ तिवाड़ी ने कहा कि जीवन में प्रगति आत्मनिर्भरता एवं जागरूकता का समन्वय होने पर संभव होती है। उन्होंने दूरस्थ शिक्षा में अकेडमिक व व्यावसायिक शिक्षा के बारे में जानकारी देते हुए क्वालिटी एजुकेशन दिए जाने पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने पाठ्यसामग्री, वीडियो, ऑनलाईन चर्चा, एसाइनमेंट, नोट्स आदि के बारे में बताया।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो. प्रभातकुमार मिश्रा ने कहा कि भारत में युवा आबादी की बहुतायत है और उसे संसाधन में बदलने की आवश्यकता है। युवावर्ग के लिए मूक्स शिक्षा पद्धति लाभदायक सिद्ध हो सकती है। कोरोना काल में ई-लर्निंग और मूक्स की क्षमता व सीमाएं पता चलीं। वेबिनार के प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने वेबिनार की विषयवस्तु के बारे में बताया तथा ओडीएल (ओपन डिस्टेंस लर्निंग) व मूक्स के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इसमें शिक्षा मुक्त है, कोई बंधन नहीं है। उन्होंने घरेलू महिलाओं, विकलांगों आदि के लिए ओडीएल और उच्च शिक्षा के लिए मूक्स को लाभदायक बताया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्रतिभा कोठारी ने मंगलाचरण किया एवं डॉ. प्रेमलता चौरड़िया ने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय का परिचय दिया तथा विश्वविद्यालय के अनुशास्ताओं के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन सुश्री प्रगति चौरड़िया ने किया।

सूचना तकनीक व विभिन्न एप्प से दूरस्थ शिक्षा बन सकती है प्रभावी- डॉ. आमीन

'दूरस्थ शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका' पर वेबिनार आयोजित

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा ''दूरस्थ शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका'' विषय पर 11 मार्च को एक वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार के मुख्य वक्ता महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा गुजरात के फैकल्टी ऑफ कॉमर्स के डॉ. प्रशांत आमीन ने दूरस्थ शिक्षा में आईटी की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए एक पीपीटी के माध्यम से नवीन शिक्षा नीति-2021 एवं परम्परागत व ऑनलाईन ट्रेनिंग के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने विद्यार्थी, शिक्षक, शोधार्थी एवं अभिभावकों के जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी की उपयोगिता के बारे में भी जानकारी दी और उन्होंने बताया कि दूरस्थ शिक्षा के शिक्षकों को विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए गूगल क्लासरूम, माइंड मैपिंग, वर्ल्ड क्लाउड, जैम बोर्ड, पौडकास्ट और ओलेप्स आदि उपकरणों का उपयोग कर हम अपनी दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को और प्रभावशाली व आसान बना सकते हैं। फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट श्रीगंगानगर के प्रो. निक्की शर्मा ने अपने वक्तव्य में तीन तरह के तत्त्वों के बारे जानकारी देते हुए कम्प्यूटर प्रबंधन और निर्देशन, कम्प्यूटर एडेड लर्निंग, कम्प्यूटर कॉन्फ्रेंसिंग आदि पर प्रकाश डाला। वेबिनार का संचालन प्रगति चौरड़िया ने किया। प्रारम्भ में स्वागत भाषण प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रस्तुत किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. जे.पी. सिंह ने प्रस्तुत किया। वेबिनार में छात्रों, शिक्षकों और शोधार्थियों समेत 281 प्रतिभागियों ने पंजीकरण करवाया एवं वेबिनार से लाभ लिया।

महामारी एवं दूरस्थ शिक्षा परीक्षा पर एक दिवसीय वेबिनार का आयोजन

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय एवं परीक्षा विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में ''महामारी एवं दूरस्थ शिक्षा परीक्षा'' विषय पर एक दिवसीय वेबिनार का आयोजन 17 जून को किया गया। इसमें तीन विद्वानों द्वारा अलग-अलग विषयों पर व्याख्यान दिया गया। वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा के क्षेत्रीय केन्द्र बीकानेर के निदेशक बलवन्त सिंह सैनी ने अपने वक्तव्य में बताया कि मुक्त/दूरस्थ शिक्षा आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इस शिक्षा की पहुंच दूर दराज रहने वाले विद्यार्थियों तक आसानी से सम्भव है। कोविड-19 महामारी के दौरान नियमित शिक्षा भी दूरस्थ शिक्षा बनकर रह गई है। ऐसी स्थिति में दूरस्थ शिक्षा की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। वर्तमान समय में महामारी के दौरान ऑफलाईन परीक्षा कराना कठिन ही नहीं असम्भव सा हो गया था, ऐसी स्थिति में ऑनलाईन परीक्षा कराना ही एक मात्र विकल्प बचता है।

डॉ प्रशांत सहाय, निदेशक जेईसीआरसी विश्वविद्यालय, जयपुर ने अपने वक्तव्य में ऑनलाइन परीक्षा से होने वाले लाभ एवं हानि पर विस्तार से प्रकाश डाला और यह बताया कि थोड़ी बहुत सावधानियों के साथ ऑनलाईन एग्जाम कराना ही वर्तमान समय में उचित है। मदस विश्वविद्यालय अजमेर के उपकुलसचिव डॉ सूरजमल राव ने अपने वक्तव्य में परीक्षा में होने वाली समस्याओं के साथ ही उसके समाधान के बारे में विस्तार से बताया। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने वेबिनार के स्वरूप एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए वक्ताओं का परिचय दिया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने किया। इस वेबिनार में संस्थान के संकाय सदस्य एवं सम्प्रसारक आदि उपस्थित रहे।

स्वयं शिक्षण सामग्री के निर्माण एवं उनके पुनरावलोकन पर एक दिवसीय वेबिनार का आयोजन

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की प्रेरणा से दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के तत्त्वावधान में 29 मई को आयोजित एक दिवसीय वेबिनार में ''स्वयं शिक्षण सामग्री के निर्माण एवं उनके पुनरावलोकन'' के अन्तर्गत तीन उपविषय में विभक्त कर तीन विद्वानों के व्याख्यान द्वारा प्रकाश डाला गया। प्रथम उपविषय - ''स्वयं शिक्षण सामग्री का निर्माण'' पर इग्नू के क्षेत्रीय केन्द्र जयपुर के निदेशक डॉ. ममता भाटिया ने स्पष्ट किया। द्वितीय उपविषय - ''स्वयं शिक्षण सामग्री-डिजाईन एवं डेवलपमेंट का आधार'' पर इग्नू के क्षेत्रीय केन्द्र जोधपुर के सहायक निदेशक, डॉ. मुक्तयार अली ने अपने विचार रखे। तृतीय उप विषय - ''स्वयं शिक्षण सामग्री के संशोधन एवं परिमार्जन'' पर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रकाश डाला। सभी विद्वानों ने दूरस्थ शिक्षा में स्वयं शिक्षण सामग्री के निर्माण एवं उनके संशोधन विषय पर गहनतम ज्ञान (डिजाईन, डेवलपमेंट, संशोधन एवं मूल्यांकन) एवं मार्गदर्शन दिया। वेबिनार का संयोजन सहायक आचार्य कम समन्वयक डॉ. जे.पी. सिंह ने किया। मुख्य विशेषज्ञ वक्ता का परिचय सहायक आचार्य प्रगति चौरड़िया ने किया तथा आभार ज्ञापन सहायक निदेशक पंकज भटनागर ने किया। इस अवसर पर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के सभी सदस्य, सम्प्रसारक उपस्थित रहे।

'मैनेजिंग ऑनलाइन क्लासेज एण्ड डवलपिंग कन्टेन्ट फॉर मूक्स' पर पांच दिवसीय प्रोग्राम आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संकाय संवर्धन कार्यक्रम के अन्तर्गत 'मैनेजिंग ऑनलाइन क्लासेज एण्ड डवलपिंग कन्टेन्ट फॉर मूक्स' शीर्षक पर पांच दिवसीय प्रोग्राम का आयोजन 6 अप्रेल को शुरु किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में महाविद्यालय के प्राचार्य एवं दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि इस कार्यशाला की उपयोगिता कोरोना जैसी वैश्विक त्रासदी में बहुत अधिक है, क्योंकि इस स्थिति में अध्ययन एवं अध्यापन का अधिकांश कार्य ऑनलाइन किया जा रहा है।

इस पांच दिवसीय कार्यशाला में गूगल क्लासरूम, गूगल साईट, विकी पैजेज एवं ओपन एयुकेशन रिसोर्स पर अभ्यास करवाया गया। कार्यशाला संयोजिका डॉ. प्रगति भटनागर एवं सह संयोजक के रूप में अभिषेक शर्मा ने कार्यशाला को गतिशील रखते हुए ऑनलाइन अध्ययन-अध्यापन के बारे में जानकारी दी। उद्घाटन सत्र के बाद प्रथम दिवस के तकनीकी सत्र में गूगल क्लासरूम की उपयोगिता बतायी गई।

कार्यशाला के दूसरे दिन 7 अप्रेल को गूगल क्लासरूम के विभिन्न आयामों जैसे गूगल क्लासरूम बनाना, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को जोड़ना, विषय सामग्री डालना, असाइन्मेन्ट्स पोस्ट करना तथा असाइन्मेन्ट जाँच करने की विस्तृत जानकारी सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक रूप में दी गई तथा संभागियों द्वारा इनका प्रायोगिक अभ्यास भी किया गया। तीसरे दिन 8 अप्रेल को कार्यशाला संयोजिका डॉ. प्रगति भटनागर ने गूगल साईट्स के बारे में जानकारी देते हुए गूगल साईट बनाने एवं पब्लिश करने की प्रक्रिया को बताया। उन्होंने ऑनलाइन अध्ययन-अध्यापन में इसकी महत्ता पर विस्तृत व्याख्यान दिया।

चौथे दिन 9 अप्रेल को विकिपीडिया के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यशाला संयोजिका डॉ. प्रगति भटनागर ने बताया कि विकिपीडिया एक ओपन ऑनलाइन इनसाइक्लोपीडिया है, जिस पर ऑडियंस भी अपने विचार शेयर एवं अपलोड कर सकते हैं। इसके तहत कोई भी व्यक्ति अपना कंटेंट ऑनलाइन अपलोड कर सकता है। उन्होंने कार्यशाला में विकी पेजेज बनाने की प्रक्रिया को विस्तार से समझाया तथा इसका अभ्यास भी करवाया।

कार्यशाला का पांचवा व अंतिम दिवस प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी की अध्यक्षता में समापन सत्र के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यशाला के इस सत्र में संयोजिका डॉ. प्रगति भटनागर ने ओपन एजुकेशन रिसोर्सेज की उपयोगिता तथा शिक्षा एवं मूक्स कोर्सेज बनाने में उनके महत्त्व पर विस्तृत चर्चा की। कार्यशाला के अंतिम सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. एपी त्रिपाठी ने बताया कि ऐसी कार्यशालाओं का आयोजन न केवल अध्ययन की गुणवत्ता बढ़ाता है, बल्कि कोरोना जैसी वैश्विक त्रासदी के तहत अध्यापन हेतु भी बहूपयोगी साबित हो सकता है।

इस दौरान प्रो. त्रिपाठी ने डॉ. प्रगति भटनागर को कार्यशाला के सफल संचालन के लिए संस्थान का प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया। समापन सत्र में जैनोलॉजी विभाग के डॉ. अरिहंत जैन एवं शिक्षा विभाग से डॉ. अमिता जैन, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय से अभिषेक चारण, डॉ. विनोद कुमार सैनी, श्वेता खटेड़, डॉ. अमृतान्शु आदि ने कार्यशाला से जुड़े अनुभवों को साझा किया एवं कार्यशाला की महत्ता पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यशाला में शिक्षा विभाग, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं जैनोलॉजी विभागों की भागीदारी रही।

जैन संस्कृति, दर्शन व भाषा पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित आंतरिक व्याख्यानमाला के तहत 16 फरवरी को सहायक आचार्य सोमवीर सांगवान ने 'जैन संस्कृति, दर्शन एवं भाषा' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। सांगवान ने अपने व्याख्यान में जैन तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर 24 तीर्थंकरों के समय में जैन दर्शन व संस्कृति के विकास, जैन साहित्य की रचनाओं आदि पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि जैन संस्कृति में अनेकांतवाद व स्याद्वाद का सिद्धांत महत्त्वपूर्ण रहा है। साथ ही सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र के बारे में भी बताया। उन्होंने अर्धमागधी, कन्नड़, तमिल, हिन्दी आदि में रचित जैन साहित्य की जानकारी भी अपने व्याख्यान में दी। व्याख्यान के अंत में उन्होंने उपस्थित संभागियों के प्रश्नों का समाधान भी प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने जैन धर्म, संस्कृति व दर्शन सम्बंधी अनेक महत्त्वपूर्ण व चर्चित बातों का खुलासा किया। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया।

नदियों की स्वच्छता में आया आमूलचूल परिवर्तन- पीयूष गुप्ता

'जियो इनफॉर्मेटिक्स टेक्नोलॉजीज एंड केरियर अपॉर्चुनिटी' पर ऑनलाइन वेबिनार आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की प्रेरणा व संरक्षण में 15 मई को 'जियो इनफॉर्मेशन तकनीक एवं रोजगार की संभावनाएं' विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित किया गया। वेबिनार की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने की। प्रमुख वक्ता के रूप में भारत सरकार के जलशक्ति मंत्रालय के जल संसाधन नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग के राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के भू स्थानिक विशेषज्ञ पीयूष गुप्ता तथा नेट्रा इंस्टिट्यूट ऑफ जियो इनफॉर्मेटिक्स मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी फाउंडेशन नई दिल्ली से विभागाध्यक्ष रविन्द्र नाथ तिवारी ने अपने वक्तव्य दिए। पीयूष गुप्ता ने नमामी गंगे मिशन के सफाई अभियान की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि अविरल धारा निर्मलधारा योजनाओं के माध्यम से नदियों में बारहमासों पानी बना रहे, ये प्रयास किया जा रहा है। कई गंदे नालों को रोका गया है, वहीं नदी के घाटों की सफाई पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है तथा यह भी प्रयास हो रहा है कि कल-कारखानों के वेस्टेज केमिकल को नदियों में जाने से रोका जा सके। उन्होंने आगे बताया कि पिछले वर्ष हुए लॉकडाउन के उपरांत किए गए सर्वे से नदियों की स्वच्छता में आमूलचूल परिवर्तन देखने को मिला है।

जीआईएस तकनीक से संभव है शहर भर की थ्रीडी मोनिटरिंग

वेबिनार के अतिथि वक्ता रविंद्र नाथ तिवारी ने रिमोट सेन्सिंग एप्लीकेशन के उपयोग को बताते हुए कहा कि इस तकनीक के माध्यम से विस्तृत भू-भाग का गुणात्मक विश्लेषण किया जाता है। वर्तमान में उत्तर प्रदेश सरकार के साथ ही कई राज्यों की सरकारों ने इस तकनीकी का सफलतम उपयोग किया है। तिवारी ने जी.आई.एस टेक्नोलॉजी के माध्यम से नगर पालिकाओं, नगर निगमों, नगर परिषदों द्वारा एक जगह बैठकर भी पूरे के पूरे शहर की थ्रीडी मोनिटरिंग सहज रूप से की जा सकती है। उन्होंने इन क्षेत्रों में रोजगार की अपार संभावनाओं पर भी विस्तृत जानकारी दी।

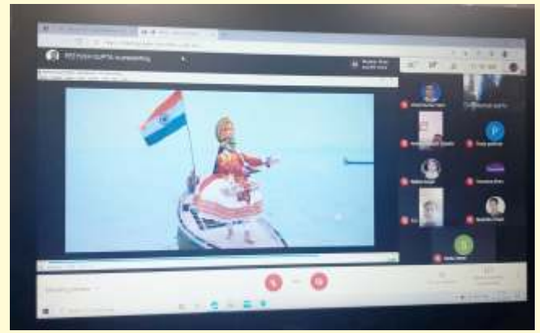

सेमिनार की शुरुआत में प्रो. त्रिपाठी ने समय-समय पर ऐसे आयोजनों के महत्त्व को उजागर किया और वेबिनार से जुड़ने के लिए प्रमुख अतिथि वक्ताओं का स्वागत किया। इनसे पहले महाविद्यालय के वेबीनार के संयोजक डॉ. विनोद कुमार सैनी ने वक्ताओं का परिचय करवाया। अंत में डॉ. बलवीरसिंह ने आभार ज्ञापित किया। इस राष्ट्रीय वेबिनार में देश के विभिन्न राज्यों के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

शहीद दिवस पर किया शहीद-ए-आजम भगतसिंह को याद

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित विवेकानंद क्लब के तत्त्वावधान में 23 मार्च को शहीद दिवस पर कार्यक्रम आयोजित कर शहीद-ए-आजम भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव को याद किया गया। प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने अध्यक्षता करते हुए शहीदों के प्रति श्रद्धा-शब्द अर्पित करते हुए बताया कि भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव जैसे क्रांतिकारियों की बदौलत ही आज उनके सपनों के स्वतंत्र भारत का विकास की ओर अग्रसर होना संभव हो सका है। उन्होंने छात्राओं को शिक्षा के प्रति विशेष रूप से जागरूक रहने हेतु भगत सिंह का उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने शहीद दिवस पर अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा- ''बहुत थे जो दिल में लगन लेके निकले, बगावत की जलती अगन लेके निकले। मिली किंतु आजादी उनकी बदौलत, जो कांधों पे अपने कफन लेके निकले।''

कार्यक्रम में अभिषेक चारण ने कहा 'कहते हैं अमर शहीदों की आयु नहीं अकारथ जाती है, वह आने वाली पीढ़ी के जांबाजों को लग जाती है।' शहीदों को नमन के इस कार्यक्रम में छात्रा पूजा प्रजापत, उर्मिला डूकिया, सोनम कंवर, आरती चारण, रितिका सांखला, मुस्कान बानू, तमन्ना आदि ने भी अपने विचार प्रकट किए।

तुलसी ने रामकथा के माध्यम से मानवीय आदर्शों की प्रतिष्ठा की- प्रो. तिवारी
'रामचरित मानस में जीवन मूल्य' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

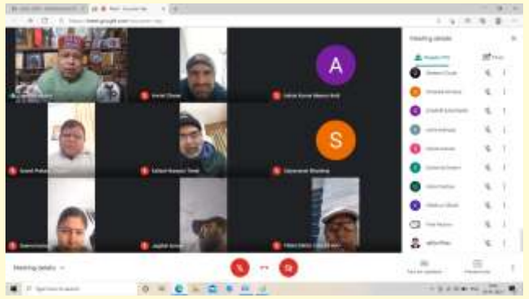

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के तत्त्वावधान में 30 जनवरी को 'रामचरित मानस में जीवन मूल्य' विषय पर एक ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. कैलाश नारायण तिवारी ने कहा कि संत तुलसी ने रामकथा के माध्यम से समग्र मानव जाति के समक्ष जो आदर्श स्थापित किए, वे आज भी अद्वितीय और अनुपम हैं। शाश्वत जीवन मूल्यों का जितना सरगर्भित विवेचन रामचरित मानस में मिलता है, उतना किसी भी दूसरे धर्मग्रंथ में मिल पाना मुश्किल है। इस ग्रंथ में रामकथा के विभिन्न पात्रों के जरिये एक आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श मित्र, आदर्श शिक्षक, आदर्श विद्यार्थी, आदर्श अभिभावक, आदर्श भाई, आदर्श पत्नी, आदर्श मित्र, आदर्श सेवक और आदर्श शत्रु तक के स्वरूप चरित्रों को निरूपित किया गया है। रामचरित मानस में संत तुलसीदास हमारे समक्ष धर्म उपदेशक और नीतिकार के रूप में उपस्थित होते हैं। इसमें देश के सनातन जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा के साथ अनेक नवीन जीवन मूल्यों की स्थापना भी की गई है।

वेबिनार के मुख्य वक्ता वाराणसी के सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय के प्रो. राजेन्द्र मिश्रा ने अपने सम्बोधन में कहा कि वाल्मीकि रामायण में चार पुरुषार्थों को आधार तत्त्व बनाया गया है, लेकिन रामचरित मानस में श्रद्धा व भक्ति की भावनाओं को महत्त्व दिया गया है। इससे क्षमा, दया, ममता, करुणा, सत्य, अहिंसा, विश्वबंधुत्व, परोपकार, उदारता आदि मूल्यों का प्रस्फुटन स्वतः ही हो जाता है। हमारी परम्परा और विरासत के महत्त्वपूर्ण प्रतिरूप के रूप में रामचरित मानस अपना स्थान रखता है। वेबिनार के प्रारम्भ में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अपने स्वागत वक्तव्य के साथ ही विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि मूल्यों का संकट दुनिया के सामने सबसे बड़ी समस्या के रूप में उपस्थित है। मूल्यों का नष्ट होना चिंताजनक है। इसलिए आवश्यक हो गया है कि अपने कालजयी साहित्य का गहन अध्ययन करके उदात्त जीवन मूल्यों की तलाश करके उन्हें आत्मसात् करने के साथ समाज में उन्हें प्रतिष्ठापित करें। वेबिनार के अंत में डॉ. विनोद कुमार सैनी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी व्याख्याता अभिषेक चारण ने किया।

'हरित विपणन : सतत् विकास की तरफ एक अभिनव कदम' पर व्याख्यान

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में मासिक व्याख्यानमाला के तहत प्राचार्य आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में श्वेता खटेड़ ने 31 मार्च को 'हरित विपणन : सतत विकास की तरफ एक अभिनव कदम' शीर्षक से व्याख्यान प्रस्तुत किया। खटेड़ ने बताया कि ग्रीन मार्केटिंग, मार्केटिंग के क्षेत्र में एक नई अवधारणा है, जिसके अन्तर्गत व्यावसायिक इकाईयां लाभ अर्जित करते हुए पर्यावरण संरक्षण तथा पर्यावरण की मुख्य समस्याओं के निदान में अपनी भूमिका निभाती हैं। व्याख्यान में उपभोक्ताओं को ग्रीन प्रोडक्ट्स के बारे में जागरूक करने के तरीके बताने के साथ ग्रीन मार्केटिंग के तीन पी-प्रोडक्ट, प्रोडक्शन प्रोसेस, पैकेजिंग की विस्तृत जानकारी भी दी गई। खटेड़ ने व्याख्यान के पश्चात् सभी संकाय सदस्यों की शंकाओं एवं जिज्ञासाओं के माकूल उत्तर भी दिये।।

अंत में प्राचार्य त्रिपाठी ने व्याख्यान की प्रशंसा की। उन्होंने इसे अन्य संकाय सदस्यों हेतु भी आदर्श व्याख्यान माना, जिससे प्रेरणा ली जा सकती है। तत्पश्चात् व्याख्यान के लिए खटेड़ को आईटी की सहायक आचार्या डॉ. प्रगति भटनागर द्वारा महाविद्यालय की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम में डॉ. बलबीर सिंह, अभिषेक चारण, अभिषेक शर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. विनोद कुमार सैनी द्वारा किया गया।

प्रत्येक क्षेत्र की प्रगति में जनसंख्या है आवश्यक घटक - डॉ. विपिन सैनी

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की प्रेरणा से 25 फरवरी को ''समकालीन समय में जनसंख्या भूगोल'' विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित किया गया। वेबिनार की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की। प्रमुख वक्ता राजकीय डूंगर महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विपिन सैनी ने बताया कि वर्तमान में जनसंख्या भूगोल का अपना विशेष महत्त्व है। किसी भी क्षेत्र की प्रगति में जनसंख्या एक आवश्यक घटक होती है। उन्होंने जनसंख्या के वितरण, संरचना, प्रवास और वृद्धि में पायी जाने वाली क्षेत्रीय भिन्नताओं पर प्रकाश डाला।

राजकीय कला महाविद्यालय सीकर से असिस्टेंट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डॉ. जितेन्द्र डी. सोनी ने जनसंख्या प्रवास पर प्रकाश डालते हुए समय के साथ होने वाले बदलावों पर चर्चा की, साथ ही कहा कि प्रादेशिक विकास का मुख्य लक्ष्य मानव विकास है। डॉ. सोनी ने मानव विकास की विषमताओं पर भी विस्तृत चर्चा की। सेमिनार की शुरुआत में प्रो. त्रिपाठी ने समय-समय पर होने वाले ऐसे आयोजनों के महत्त्व को उजागर किया, वहीं वेबिनार से जुड़ने के लिए प्रमुख अतिथि वक्ताओं का स्वागत किया। इससे पूर्व वेबिनार के संयोजक व भूगोल व्याख्याता डॉ. विनोद कुमार सैनी ने वक्ताओं का परिचय करवाया। इस राष्ट्रीय वेबिनार में देश के विभिन्न राज्यों से प्रतिभागियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। व्याख्याता सोमवीर सांगवान ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

बसंत पंचमी पर्व मनाया गया

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में बसंत पंचमी कार्यक्रम का आयोजन प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें उन्होंने कहा कि बसंत पंचमी का त्योहार भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति का एक बेहतरीन त्योहार है। इस दिन को विद्या की देवी माँ सरस्वती के प्राकट्य दिवस के रूप में भी मनाते हैं। कार्यक्रम में अभिषेक चारण, डॉ. बलवीर सिंह व सोमवीर सांगवान ने भी विचार रखे। कार्यक्रम में छात्रा पुष्पा बिजारणियां, मनीष तुनगरिया, सीमा बिडियासर, सोनम कंवर, स्नेहा शर्मा, निधि शर्मा, भगवती रेगर ने भी प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम में डॉ. प्रगति भटनागर, कमल कुमार मोदी, अभिषेक शर्मा, डॉ. विनोद कुमार सैनी, श्वेता खटेड़, देशना चारण आदि उपस्थित रहे।

अहिंसा एवं शांति विभाग

शहीद दिवस पर किया गांधी को याद

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के अन्तर्गत महात्मा गांधी की पुण्यतिथि शहीद दिवस पर 31 जनवरी को एक कार्यक्रम का आयोजन करके राष्ट्रपिता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम में डॉ. लिपि जैन ने महात्मा गांधी को आधनिक युग में अहिंसा के प्रतीक के रूप में चित्रित करते हुए उनके द्वारा प्रतिपादित शिक्षाओं को वर्तमान की विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए महत्त्वपूर्ण बताया। विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने गांधीमार्ग की विशेषताओं को रेखांकित करते हुये वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में उसका महत्व बताया तथा कहा कि इच्छाओं के अल्पीकरण एवं सरलीकरण से मानव समाज की विभिन्न समस्याओं का समाधान संभव है। डॉ. रविन्द्रसिंह राठौड़, डॉ. बलवीर सिंह, डॉ. विकास शर्मा, मोनिका भाटी व कोमल तुनवाल ने भी अपने विचार रखे व गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। अंत में प्रेरणा जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी राखी प्रजापत ने किया।

फार्म 4
(नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान
2.	प्रकाशन अवधि	:	अर्द्धवार्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	रमेश कुमार मेहता
	क्या भारत के नागरिक है ?	:	हाँ
	पता	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान
4.	प्रकाशक का नाम	:	रमेश कुमार मेहता
	क्या भारत के नागरिक है	:	हाँ
	पता	:	(कॉलम 3 के अनुसार)
5.	सम्पादक का नाम	:	डॉ. समणी भास्कर प्रज्ञा
	क्या भारत के नागरिक है	:	हाँ
	पता	:	(कॉलम 3 के अनुसार)
6.	उन व्यक्तियों के नाम पते जो पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान

मैं रमेश कुमार मेहता एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

रमेश कुमार मेहता
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम

चिन्तनशील, रचनात्मक, संस्कारित शिक्षा से ही व्यक्ति का समग्र विकास संभव- डॉ. शर्मा

सात दिवसीय नेशनल एफडीपी कार्यक्रम

संस्थान के शिक्षा विभाग में एक सप्ताह का फैकल्टी डवलपमेंट प्रोग्राम (28 जून से 4 जुलाई) का शुभारम्भ किया गया। कुलपति प्रो. बीआर. दूगड़ के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता, आरबीएस कॉलेज आगरा के फैकल्टी ऑफ एजुकेशन के विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमार शर्मा ने 'उच्च शिक्षा में गुणवत्ता' विषय पर अपने व्याख्यान में उच्च शिक्षा से तात्पर्य श्रेष्ठ शिक्षा अर्थात् सामान्य शिक्षा से ऊपर की शिक्षा बताते हुए स्नातक, परास्नातक, शोध की शिक्षा से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि उच्च गुणवत्ता के लिए मानवीय और भौतिक संसाधनों में गुणवत्ता लाई जानी आवश्यक है। मानव के पूर्ण विकास के लिए ज्ञान, भाव एवं क्रिया के पक्षों का विकास करना चाहिए। आज की शिक्षा मात्र बौद्धिक विकास तो कर रही है, लेकिन भाव व क्रिया पक्ष का विकास नहीं कर रही है। इसलिए शिक्षा से विद्यार्थियों का अधूरा विकास हो रहा है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में संवर्धन करने के लिए हमें शिक्षा को चिन्तनशील, रचनात्मक, संस्कारित, प्रगतिशील, अन्वेषणात्मक, विश्लेषणात्मक, नवाचारयुक्त बनाना एवं सत्, चित्त, आनंद का पूर्ण विकास करना होगा। प्रारम्भ में डॉ. अमिता जैन ने अतिथियों का स्वागत एवं परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के संयोजक एवं विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

सामाजिक अनुसंधान का गिरता स्तर चिंताजनक

कार्यक्रम में दूसरे दिन 29 जून को जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के समाज कल्याण विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. केएन व्यास ने मुख्य वक्ता के रूप में 'सामाजिक अनुसंधान तथा विश्लेषण' विषय पर अपने सम्बोधन में कहा कि नये तथ्यों की खोज, पुराने तथ्यों का पुनः परीक्षण तथा कार्य-कारण सम्बंधों का पता लगाना ही अनुसंधान है। अनुसंधानकर्ता को समय तथा संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर ही अनुसंधान करना चाहिए। उन्होंने अनुसंधान कार्य में ध्यान में रखे जाने वाले महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। प्रो. व्यास ने सामाजिक अनुसंधानों में सांख्यिकी के उपयोग के बारे में भी बताया तथा देश में हो रहे सामाजिक अनुसंधानों में गुणवत्ता की कमी पर चिंता जताते हुए सुधार की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम में देश के विविध शिक्षाविद् प्रो. रीटा शर्मा, प्रो. एमपी सिंह, प्रो. अशोक सिडाना, डॉ. सुनील कुमार तिवाड़ी, डॉ. अंजना अग्रवाल, डॉ. मौसम पारीक, डॉ. अमित राठौड़, डॉ. आशासिंह, डॉ. लिपि जैन, डॉ. रविन्द्र राठौड़, डॉ. अविनाश पारीक, डॉ. किरण आदि उपस्थित रहे।

शिक्षण, शोध व प्रसार में विश्वविद्यालयों की अनूठी भूमिका जरूरी

कार्यक्रम में तीसरे दिन 30 जून को मुख्य वक्ता जैविभा विश्वविद्यालय के प्रो. नलिन के. शास्त्री ने ''उच्च शिक्षा में नवीन प्रवृत्तियां'' विषय पर बोलते हुए विश्वविद्यालय की उच्च शिक्षा में चुनौतियों के बारे में बताया। उन्होंने असमानता की भावना, प्रदेश में गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालयों और ग्रामीण विश्वविद्यालय की कमी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव, नवोन्मेष विधियों की कमी, शिक्षकों और विशेषकर योग्य शिक्षकों के साथ मानवीय एवं भौतिक संसाधनों की कमी, छात्र-शिक्षकों का उचित अनुपात नहीं होना, पाठ्यक्रम में सृजनात्मकता का अभाव, प्रामाणिकता की कमी, नैक के प्रति उदासीनता, शोध की गुणवत्ता में गिरावट, अन्तःसम्बंध शोध की कमी आदि चुनौतियों का समाधान नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन से किया जा सकता है। उन्होंने नई शिक्षा नीति को समग्र विकास, रोजगारपरक और सार्थक शिक्षा, लचीलेपन की शिक्षा, वैश्विक शिक्षा से ओतप्रोत तथा मानव सृजन का विकास करने में समर्थ बताया तथा कहा कि शिक्षण, शोध एवं प्रसार में विश्वविद्यालयों को अनूठी भूमिका निभानी चाहिए।

पर्यावरण को स्वच्छ व हरा रखने में उपयोगी है ग्रीन कैमेस्ट्री

संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम में व्याख्यान प्रस्तुत

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 12 अप्रेल को संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम के तहत डॉ. ममता सोनी ने ग्रीन कैमेस्ट्री के सिद्धांतों की उपयोगिता पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. सोनी ने बताया कि ग्रीन कैमेस्ट्री पर्यावरण के प्रदूषण को कम करने में उपयोगी है। इसके द्वारा विभिन्न संश्लेषण से बनने वाले विषैले व विस्फोटक सह उत्पादों का बनना कम किया जाकर पर्यावरण को स्वच्छ व हरा रखा जा सकता है। उन्होंने बताया कि ग्रीन कैमेस्ट्री 12 सिद्धांतों पर आधारित है।

इन सभी 12 सिद्धांतों के अनुप्रयोगों के आधार पर इस शाखा में वृहत्त स्तर पर अनुसंधान किया जा सकता है। हानिकारक पदार्थों को दूर करने में ग्रीन कैमेस्ट्री की अपनी उपयोगिता है। ग्रीन नैनो टेक्नोलॉजी भी एक नवाचार शाखा है, जिससे पर्यावरण विज्ञान को नैनो टेक्नोलॉजी से जोड़कर सूक्ष्म स्तर के व पर्यावरण सहायक उत्पाद बनाए जा सकते हैं। व्याख्यान के अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने आभार ज्ञापित किया।

नैनो टेक्नोलॉजी से संभव है किसी वस्तु को एक हजार गुणा तक मजबूत बनाना

संस्थान के शिक्षा विभाग में 26 मार्च को संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम के तहत 'नैनो साइंस तथा नैनो टेक्नोलॉजी' विषय पर ललित कुमार गौड़ ने व्याख्यान प्रस्तुत किया।

उन्होंने कहा कि प्रोद्योगिकी लोगों के जीवन में काफी महत्त्वपूर्ण है और आने वाले समय में इसकी भूमिका नैनो तकनीक क्षेत्र में अधिक बढने वाली है। नैनो, अति सूक्ष्म आकार वाले तत्त्वों, जो मीटर के एक अरबवें हिस्से से बने होते हैं, का विज्ञान है। नैनो टेक्नोलॉजी व्यावहारिक जीवन में 1 से 100 नैनोमीटर स्केल में प्रयुक्त और अध्ययन की जाने वाली सभी तकनीकों और सम्बंधित विज्ञान का समूह है। उन्होंने बताया कि नैनो टेक्नोलॉजी अणुओं व परमाणुओं की इंजीनियरिंग है, जो भौतिकी, रसायन, बायोइन्फोरमेटिक्स व बायोटेक्नोलॉजी जैसे विषयों को आपस में जोड़ती है। इस टेक्नोलॉजी से बायोसाइंस, मेडिकल साइंस, इलेक्ट्रोनिक्स व रक्षा क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाया जा सकता है, क्योंकि इससे किसी वस्तु को एक हजार गुणा तक मजबूत, हल्का और भरोसेमंद बनाया जा सकता है। छोटे आकार, बेहतर क्षमता और टिकाऊपन के कारण मेडिकल और बायोइंजीनियरिंग में नैनो टैक्नोलॉजी तेजी से बढ रही है।

चिकित्सा विज्ञान में भी सहायक

गौड़ ने बताया कि नैनो साइंस अति सूक्ष्म मशीनें बनाने का विज्ञान है। ऐसी मशीनें जो मानव शरीर में उतरकर उसकी धमनियों में चल-फिर कर वहीं रोग का ऑपरेशन कर सके। आज हर घरेलु वस्तु में नैनो तकनीक का समावेश है। उपभोक्ता वस्तुओं में इनके अनेक अनुप्रयोग हैं, जैसे धूप का चश्मा, ग्लास कोटिंग में नैनो तकनीक का उपयोग होता है, जिसके कारण वे और भी मजबूत और हानिकारक पराबैंगनी किरणों को पहले की तुलना में अधिक बेहतर तरीके से ब्लॉक कर सकते हैं। सनस्क्रीन और अन्य कॉस्मेटिक्स में भी नैनोकण होते हैं, जो प्रकाश को आर-पार जाने देते है; परन्तु पराबैंगनी किरणों को रोक लेते हैं। पहनावे के लिए कपड़ों को भी ये अधिक टिकाऊ बनाते हैं, उन्हें वाटरप्रूफ और हवा प्रूफ बनाते हैं। पैकेजिंग जैसे कि दूध आदि के कार्टन में नैनोकण इस्तेमाल किए जाते हैं, ताकि दूध प्लास्टिक की थैली में अधिक समय तक तरोताजा रहे।

नैनो टेक्नोलॉजी में है कॅरियर की असीम संभावनाएं

उन्होंने अपने व्याख्यान में जानकारी दी कि देश में नैनो तकनीक के क्षेत्र में अनुसंधान का काम तेजी से चल रहा है। भविष्य में इस क्षेत्र में विकास की काफी संभावनाएं हैं। नैनो टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में लगातार विकास होने की वजह से युवाओं के लिए इस क्षेत्र में असीम संभावनाएं उत्पन्न होंगी। यह इंटरडिसीप्लेनरी एरिया है, इसलिए इस क्षेत्र में आने वाले युवाओं को फिजिक्स, कैमिस्ट्री, बॉयोलॉजी और मैथ्स जैसे विषयों से अच्छा होना जरूरी है। लगातार अनुसंधान एवं विकास की वजह से यह कहा जा सकता है कि आने वाला समय नैनो टैक्नोलॉजी का ही है। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने चिकित्सा तथा मेडिकल क्षेत्र में इस टेक्नोलॉजी की आवश्यकता को महत्त्वपूर्ण बताया।

'शोध में सत्यनिष्ठता' विषय पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 13 फरवरी को 'संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम' के अन्तर्गत ''शोध में सत्यनिष्ठता'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन ऑनलाईन किया गया। व्याख्यान में डॉ. भाबाग्रही प्रधान ने कहा कि तथ्यों के संकलित परीक्षण के प्रसारितता, सम्बन्धित साहित्य आदि के कार्यों की सफलता को सत्यता से मापा जा सकता है। किसी भी शोध में विषय सामग्री की प्रामाणिकता को पूर्ण बनाकर रखना चाहिए। विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल. जैन ने शोध में गुणवत्ता, ईमानदारी और शुचिता होनी आवश्यक बताई। उन्होंने कार्यक्रम के अन्त में सभी का आभार ज्ञापित किया।

'शिक्षा को कैसे बनावें आनंदकारी' विषय पर व्याख्यान

संस्थान के शिक्षा विभाग में ''संकाय संवर्धन कार्यक्रम'' के अंतर्गत 27 मार्च को 'शिक्षा को कैसे बनावें आनंदकारी' विषय पर विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि गीत, संगीत, कला, नृत्य, प्राकृतिक संरक्षण, बागवानी करना, पेड़ लगाना, सेवा, असहायों की सहायता, रचनात्मक कार्य, सामाजिक गतिविधियों, भ्रमण आदि से शिक्षा को आनंदकारी बनाया जा सकता है। समय का सदुपयोग, रचनात्मक कार्य एवं सकारात्मक सोच आदि से केवल शिक्षा ही नहीं बल्कि जीवन के हर पहलु को आनन्दमय बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि स्वयं और दूसरों के प्रति सकारात्मक सोच और नजरिया ही हमें खुशी और नकारात्मक सोच हमें दुःखी बनाती है। जहां हैं, जैसी स्थिति में हैं, उसी का भरपूर आनंद उठाना चाहिए।

कृत्रिम बुद्धि की उपयोगिता पर व्याख्यान

संस्थान के शिक्षा विभाग में ''संकाय संवर्धन कार्यक्रम'' के अंतर्गत 8 अप्रेल को 'आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी' के सम्बंध में व्याख्यान प्रस्तुत किया जाकर एआई यानि कृत्रिम बुद्धि के मूलभूत सिद्धांतों और उसकी व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता के बारे में विस्तार से बताया गया। विषय विशेषज्ञ प्रमोद ओला ने इस पर अपने व्याख्यान में बताया कि दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाले मोबाईल, सोशल मीडिया, वीडियो गेम, ऑटोमोबाईल, व्यापार, शिक्षा, चिकित्सा तथा उच्च स्तरीय कम्प्यूटराइज्ड रोबोट बनाने में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी द्वारा सफलता प्राप्त की गई है। चिकित्सा क्षेत्र में मानव की पहुंच से बाहर वाले अंगों के इलाज में रोबोट द्वारा सफलता मिली है। खेल जगत् में भी इसके प्रयोग के माध्यम से सही निर्णय लेना संभव हुआ है। ओला ने बताया कि आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस के माध्यम से मानव जीवन को सरल बनाने और विभिन्न कार्यों को मशीनों के जरिए करना संभव हुआ है। उन्होंने रोबोट के उपयोग पर भी चर्चा की। एआई से भविष्य में सुरक्षा, शिक्षा, चिकित्सा आदि सभी क्षेत्रों में विभिन्न समस्याओं को सुलझाना भी संभव होगा। व्याख्यान के अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने आभार ज्ञापित किया।

आन्तरिक व्याख्यानमाला

शिक्षक प्रशिक्षण की भावी चुनौतियों में नवाचार व तकनीक अपनायें

आंतरिक व्याख्यानमाला कार्यक्रम

संस्थान के शिक्षा विभाग में 4 जनवरी को संचालित आंतरिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत डॉ. गिरीराज भोजक ने 'समावेशी शिक्षा एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया' विषय पर अपना व्याख्यान देते हुय विभिन्न नवाचारों एवं लचीलापन अपनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि समावेशी शिक्षा की विविध चुनौतियों एवं उनके अनुरूप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नवाचार एवं व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर आधारित लोचशीलता अपनाना आवश्यक है। कक्षा में व्याप्त विभिन्न परिस्थितियों यथा प्रतिभाशाली, औसत और न्यून उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के सीखने के तरीकों में भिन्नतायें पाई जाती है। नेशनल सेंटर ऑन युनिवर्सल डिजाईन फॉर लर्निंग (2016) के द्वारा मस्तिष्क के सीखने सम्बंधी शोध कार्यों के आधार पर अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प (यूडीएल) के द्वारा विविध अधिगम शैलियों के समागम हेतु प्रतिनिधित्व के साधन, विद्यार्थी अभिव्यक्ति के अवसरों में वृद्धि के साथ विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने पर बल दिया गया है। डॉ. भोजक ने भावी शिक्षकों के रूप में सभी प्रशिक्षकों को अधिकाधिक समावेशी शिक्षा की चुनौतियों तथा संभावित समाधानों के लिये सघन प्रशिक्षण एवं नवाचारों को अपनाने पर बल दिया। कार्यक्रम के अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने सभी संकाय सदस्यों को शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में आने वाली भावी चुनौतियों के अनुरूप नवाचार तथा तकनीकी साधनों को अपनाने के लिये प्रेरित किया।

ग्रीन कम्प्यूटिंग को आंदोलन बनाना जरूरी

संस्थान के शिक्षा विभाग में 31 जनवरी को आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम में 'ग्रीन कम्प्यूटिंग एक पर्यावरण सम्मत उपागम' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। इसमें डॉ. मनीष भटनागर ने कहा कि आधुनिक समाज में प्रत्येक कार्य सूचना और प्रौद्योगिकी पर आधारित है और मानव जीवन के प्रत्येक कार्य क्षेत्र में बढ़ रहे कम्प्यूटर, मोबाईल जैसी तकनीकों के उपयोग में इन उपकरणों का अपशिष्ट भी एकत्रित होकर बढ़ता जा रहा है और इनके कारण पर्यावरण खतरे भी बढ़ने लगे हैं। ग्रीन कम्प्यूटिंग में पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के साथ विभिन्न उपकरणों का प्रयोग सुनिश्चित करता है। संरक्षण वाले कम्प्यूटर, प्रिंटर, सर्वर का निर्माण और सहयोगी स्टोरेज व्यवस्था को विकसित करने, ऑटो ऑफ सिस्टम लाए जाने, कम्प्यूटर अपशिष्ट के लिए संग्रहण केन्द्र बनाए जाने आदि कदमों को उठाए जाने की आवश्यकता है।

ग्रीन कम्प्यूटिंग को एक आंदोलन के रूप में लिया जाकर अपनाना होगा। व्याख्यान के पश्चात् प्रश्नोत्तर सत्र में सहभागियों के सवालों का जवाब देते हुए समाधान की दिशा में चर्चा की गई। अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने आभार ज्ञापित किया।

शिक्षा का अधिकार पर व्याख्यान

संस्थान के शिक्षा विभाग में 10 अप्रेल को आंतरिक व्याख्यानमाला में डॉ. मनीष भटनागर ने अपने व्याख्यान में कहा कि शिक्षा का अधिकार संयुक्त राष्ट्र की स्थापना से ही मानव के लिए आवश्यक माना गया। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 एक दीर्घ विचार विमर्श, चर्चा एवं विभिन्न समितियों के द्वारा अनुमोदित अधिनियम है। भारतीय संविधान के 86वें संशोधन के आधार पर इस नियम को अनुमोदित किया गया है। भारतीय संसद द्वारा निर्मित एवं पारित निःशुल्क एवं अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 को 1 अप्रेल, 2010 से सम्पूर्ण देश में लागू कर दिया गया और प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बच्चे का अधिकार बना दिया गया। 6 से 14 वर्ष तक के बालकों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराना तथा किसी भी विद्यार्थी से फीस, डोनेशन, अन्य शुल्क नहीं लिया जाना सम्मिलित किया गया। इसके उल्लंघन पर दस गुना जुर्माने को लिया जाने का भी नियम में है। अधिनियम में शिक्षा से वंचित समूह अनुसूचित जाति, जनजाति, सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग, भौगोलिक, लैंगिक एवं भाषायी मुद्दों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार से वांछित बालकों को भी शिक्षा से जोड़ने का प्रावधान किया गया। प्रारम्भिक नियम में 2012 में बाधित समूह के बालकों को भी शिक्षा से जोड़ने की बात कही गयी, जिसमें दिव्यांग, भाषा बाधित, वाणी बाधित, विकलांग तथा मानसिक मंदित बालकों के लिए भी शिक्षा के प्रावधान किये गये। शिक्षक छात्र अनुपात, विद्यालयी संसाधनों तथा शिक्षकों की उपलब्धता के सम्बन्ध में भी निश्चित नियम दिये गये। वंचित वर्गों हेतु 25 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया।

6 से 18 वर्ष आयु के बालकों की अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा के साथ विद्यार्थियों को विद्यालय में बनाये रखना, वंचित बालकों को विद्यालय में प्रवेश दिलाना आवश्यक कदम होगा। ग्रामीण एवं शहरी संस्थाओं में असमानता समाप्त कर शिक्षकों को अशैक्षिक कार्यों में न लगाने का प्रावधान किया है। प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति तथा संवैधानिक मूल्यों के विकास के साथ विद्यार्थी के ज्ञान क्षमता तथा टैलेण्ट को विद्यार्थी केन्द्रित अधिगम द्वारा विकसित करना भी निर्धारित किया गया। केन्द्र एवं राज्य के मध्य बजट का स्पष्ट वितरण नहीं दिया गया।

गुरु तेगबहादुर के 400वें जन्मजयंती वर्ष पर व्याख्यानमाला आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 26 अप्रेल को गुरु तेगबहादुर के इस माह 400वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में उनके अवदानों पर व्याख्यानमाला का आयोजन ऑनलाइन किया गया। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा- आदर्शों एवं सिद्धांतों की रक्षा के लिए प्राणों की आहूति देने वालों में गुरु तेगबहादुर का स्थान अनूठा रहा है। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्यामलाल पी.जी. कॉलेज सिकारपुर बुलन्दशहर के प्राचार्य प्रो. अशोक शर्मा ने गुरु तेगबहादुर का पारिवारिक परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि उन्होंने गुरु नानक के बताये मार्ग का अनुसरण किया। वे साहसी, निर्भीक, धार्मिक अडिगता, नैतिक उदारता, मानवीय धर्म के पुरोधा रहे। वे मानवीय मूल्यों के पुरोधा रहे हैं, धर्म परिवर्तन का सदैव विरोध, सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण तथा वैचारिक स्वतंत्रता के पक्षधर रहे। कार्यक्रम में 160 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम दो सत्र में सम्पन्न हुआ। संयोजक प्रो. बीएल. जैन ने अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

'युवा शक्ति में असंतोष के कारण और निवारण' पर व्याख्यान

संस्थान के शिक्षा विभाग में आयोजित व्याख्यानमाला में 'युवा शक्ति में असंतोष के कारण और निवारण' विषय पर डॉ. विष्णु कुमार ने 18 जून को अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि युवा वर्ग में असंतोष का प्रमुख कारण हमारी शिक्षा पद्धति है। स्वतंत्रता के छह दशकों बाद भी हमारी शिक्षा पद्धति में कोई भी मूलभूत परिवर्तन नहीं आया है। शिक्षा का स्वरूप आज भी सैद्धांतिक अधिक तथा प्रयोगात्मक कम है, जिससे कार्य क्षेत्र में शिक्षा का विशेष लाभ नहीं मिल पाता है। आज युवा को अपने मनपसंद विषयों को चयन करने की कम गुंजाइश होती है। परिणामस्वरूप देश में बेकारी की समस्या दिनोंदिन बढ़ रही है। उन्होंने व्याख्यान में कहा कि असंतोष के कारण हमारा युवावर्ग आज दिशाहीन हो गया है। इस असंतोष को दूर करने के लिए तथा दिग्भ्रमित युवाओं को पटरी पर लाने हेतु हमें शिक्षा व्यवस्था में अपेक्षित सुधार करने होंगे। उन्होंने कहा, शिक्षा ऐसी हो जो उनमें नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का संचार कर सके, उन्हें जीवन के लक्ष्य का बोध कराए तथा रोजगारपरक हो। वर्तमान पीढ़ी के छात्रों को रचनात्मक क्रियाकलापों में संलग्न करके तथा उन्हें समाज सेवा के कार्यों में संलग्न करके भी बहुत कुछ किया जा सकता है। यदि शिक्षा का सम्बन्ध मात्र परीक्षा से न जोड़ा जाए और शिक्षा को रोजगारमूलक बनाया जाए। अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने भी युवा शक्ति में असंतोष के कारण और निवारण पर अपने विचार व्यक्त करते हुए आभार व्यक्त किया।

सोच बदलने की जागरूकता से संभव है कन्या भ्रूण हत्या पर नियंत्रण

संस्थान के शिक्षा विभाग में 6 फरवरी को आयोजित व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 'कन्या भ्रूण हत्या रोकने के प्रति जागरुकता' विषय पर डॉ. विष्णु कुमार ने अपने व्याख्यान में कहा कि कन्या भ्रूण हत्या से हर साल लाखों अजन्मी कन्याओं की हत्या मानवता के अंत को प्रकट करती हैं। इससे देश की संस्कृति, सभ्यता, नैतिकता और प्राकृतिक न्याय की भी हत्या हो रही है। उन्होंने बताया कि देश के विभिन्न प्रांतों में प्रतिवर्ष 15 लाख के करीब कन्याओं की जन्म लेते ही अथवा भ्रूण अवस्था में ही हत्या कर दी जाती है, इसके लिए जरूरी है कि समाज की लैंगिक सोच में परिवर्तन किया जाए। गर्भस्थ बच्चे के लिंग परीक्षण पर सरकार ने कानून बनाकर प्रतिबंध लगा रखा है; लेकिन जरूरत इस बात की है कि सरकार इसे प्रभावी तरीके से लागू करे। लोगों की मानसिकता में बदलाव से ही कन्या भ्रूण हत्या को रोका जा सकता है। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने भी कन्या भ्रूण हत्या के लिए सामाजिक जागरुकता को जरूरी बताया।

''स्वामी विवेकानंद : मानव निर्माण की शिक्षा'' पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 12 जनवरी को ''स्वामी विवेकानंद- मानव निर्माण की शिक्षा'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। आयोजना में प्रो. अशोक शर्मा ने कहा कि विवेकानंद का जीवन सुनने का नहीं, जीने का है। नई ऊर्जा, नई शक्ति एवं नई उमंग भरने की प्रेरणा विवेकानंद जी के जीवन से मिलती है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था- मनुष्य का शारीरिक विकास यदि ठीक प्रकार से नहीं होता है तो उसका मानसिक, चारित्रिक, नैतिक विकास ठीक प्रकार से नहीं हो सकता। प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि स्वामी विवेकानंद उदीयमान भारत के प्रतीक के रूप में जाने जाते हैं। स्वामी विवेकानंद शारीरिक विकास, वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास, चारित्रिक विकास, व्यावसायिक विकास, धार्मिक शिक्षा, विश्व बंधुत्व की भावना का विकास आदि सभी पक्षों को विकसित करने की बात करते हैं। विवेकानंद कहते थे- वर्तमान में ऐसे वरिष्ठ मनुष्यों की आवश्यकता है, जिनकी पेशियां दृढ़ और स्नायु फौलाद की तरह कठोर हो।

बेबिनार संयोजिका डॉ. अमिता जैन ने कहा कि प्राचीन भारत से लेकर वर्तमान समय तक यदि किसी शख्सियत ने भारतीय युवाओं को सबसे ज्यादा प्रभावित किया है तो वो स्वामी विवेकानंद हैं। उनकी कही एक भी बात पर यदि कोई अमल कर ले, तो शायद उसे कभी जीवन में असफलता व हार का मुंह ना देखना पड़े। रुबीना, खुशबू दर्जी, चंचल शेखावत, छोटी देवी, निर्मला बिश्नोई, मनीषा पंवार, रेणु जैन, निधि गुर्जर, किरण, हर्षिता स्वामी ने अपने भावों को कविता, भाषण आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, डॉ. प्रद्युम्न सिंह, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. सरोज राय, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरीराज भोजक, डॉ. गिरधारी लाल, डॉ. बलवीर सिंह, डॉ. ममता सोनी, सुश्री प्रमोद ओला, मि. ललित कुमार आदि संस्थान के समस्त संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। संचालन छात्राध्यापिका रूपाली मौसलपुरिया ने किया।

'आजादी का अमृत महोत्सव' पर वेबिनार व निबंध प्रतियोगिता आयोजित

संस्थान में 12 मार्च को 'आजादी का अमृत महोत्सव' विषय पर बेबिनार का आयोजन किया गया। भारत सरकार स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 'आजादी का अमृत महोत्सव' आयोजित कर रही है। 2022 के स्वतंत्रता दिवस से 75 सप्ताह पहले इन कार्यक्रमों का आरम्भ 12 मार्च 2021 से हुआ है। प्रो.आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि इस महोत्सव को मनाने का उद्देश्य 12 मार्च 1930 की तिथि को याद करना है, जिससे हम युवाओं में कार्य के प्रति ललक, उत्साह और जोश उत्पन्न हो। उन्होंने 11 सूत्रों की भी चर्चा की जो देश हित के विषय में थे। प्रो. बी.एल.जैन ने कहा कि हम अपने विकास से ही देश के विकास को देख सकते है। डॉ. विजेंद्र प्रधान ने आजादी के बाद देश का शिक्षा स्तर, संसाधन, उद्योगों का विकास, स्वास्थ्य की दृष्टि से प्रगति, ग्रामीण विकास, यातायात आदि सुविधाओं एवं उन्नति से रूबरू करवाया। बेबिनार में 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके साथ ही निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमे 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया। संयोजिका डॉ. अमिता जैन ने कहा कि भारत जैसे विभिन्नताओं वाले देश में एकता के सूत्र में बांधे रखने के लिए महात्मा गांधी के दांडी मार्च का स्मरण करना अति आवश्यक है।

ओरियन्टेशन प्रोग्राम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 15 जनवरी से नवागन्तुक विद्यार्थियों के परिचय हेतु ओरियन्टेशन प्रोग्राम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम ऑनलाईन आयोजित करवाया गया। कार्यक्रम में नवागन्तुक छात्राओं ने अपना परिचय दिया। कार्यक्रम का उद्देश्य नवागन्तुक छात्राओं को विभाग से परिचित करवाना तथा उनकी प्रतिभाओं से परिचित होना था। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आभा सिंह ने किया।

एक्सचेंज प्रोग्राम से ज्ञान का अधिक विनिमय संभव

संस्थान के शिक्षा विभाग में एक सप्ताह (19-27 मई) के एमओयू के अनुसार एक्सचेंज प्रोग्राम आयोजित किया गया। एमओयू का यह कार्यक्रम श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सी.टी.ई. विद्यापीठ जामडोली जयपुर एवं जैन विश्वभारती संस्थान के शिक्षा विभाग के साथ किया गया। कार्यक्रम में जामडोली के प्रो. अशोक सिडाना ने कहा कि अच्छे संस्थान गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए नवाचार के कार्यक्रम करते रहते हैं। सभी संस्थानों में इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करवाया जाना चाहिए। प्रारम्भ में कार्यक्रम एवं अतिथियों का परिचय शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल.जैन ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा इस प्रकार के कार्यक्रम से शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षा का विस्तार, शिक्षा का संवर्धन होता है। श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सी.टी.ई विद्यापीठ जामडोली की प्राचार्या प्रो. रीटा शर्मा ने कहा कि एक्सचेंज प्रोग्राम से ज्ञान का अधिक विनिमय होता है और विद्यार्थियों को अन्य संस्थान की नवीन जानकारी, अध्ययन की नूतन प्रक्रिया सीखने को मिलती है। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अमिता जैन ने किया। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग की छात्राओं ने भाग लिया।

भजनों की प्रस्तुति का कार्यक्रम

संस्थान के शिक्षा विभाग में 25 अप्रैल को भगवान महावीर जयंती का कार्यक्रम ऑनलाइन किया गया। कार्यक्रम में महेश जैन, हिंडौन सिटी निवर्तमान, तहसीलदार ने ''लौट आओ महावीर पलटकर'' ''चन्दन बाला की पुकार'' आदि भजन की प्रस्तुति के साथ कहा कि कोरोनाकाल की इस विपत्ति में प्रभु ही हमारी डोर संभाल सकते हैं, हम सभी को भजन, गीत, संगीत, ध्यान के माध्यम से उसे भावों में संजोना चाहिए। श्रीपाल हिंडौन सिटी ने ''बाजे कुण्डलपुर में बधाई कि नगरी में वीर जन्मे'' आदि प्रस्तुति से वातावरण को भावविभोर कर दिया। प्रो. बी.एल.जैन ने भजन ''जय बोलो महावीर स्वामी'' की प्रस्तुति की। कार्यक्रम में लगभग विभिन्न क्षेत्रों से 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का परिचय व आभार ज्ञापन कार्यक्रम के संयोजक व विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने किया। कार्यक्रम में प्रो. अशोक सिडाना, जयपुर, डॉ. विनोद जैन, मुरादाबाद, कुलदीप जैन, कोटा, इति जैन, डॉ. बलवीर सिंह, पारस जैन हिंडौन सिटी, अलका जैन, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, जगदीश यायावर आदि उपस्थित रहे।

बसंत पंचमी पर ज्ञान व स्वाध्याय का महत्त्व बताया

संस्थान के शिक्षा विभाग में बसंत पंचमी के अवसर पर 16 फरवरी को आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बनवारीलाल जैन ने बताया कि कोविड काल में केवल ज्ञान के माध्यम से ही विविध चिंतन व सृजन संभव हो पाया। उन्होंने नित्य स्वाध्याय करने को ही सरस्वती की वास्तविक अर्चना बताया। डॉ. सरोज राय व डॉ. गिरीराज भोजक ने इस अवसर पर सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। प्रारम्भ में सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप-प्रज्ज्वलन किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आभा सिंह ने किया। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता पर संवाद

संस्थान के शिक्षा विभाग में 13-14, अप्रेल को दो दिवसीय संवाद कार्यक्रम डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता तथा हिन्दू नववर्ष का प्रारम्भ और नवरात्रि स्थापना के पर्व का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने कहा कि पर्वों से हमें प्रेरणा लेकर समाज और देश के विकास में योगदान करना चाहिए। डॉ. भीमराव अंबेडकर एक तेजस्वी विद्यार्थी, लोकप्रिय शिक्षक, बौद्धिक व रचनात्मक लेखक, दलितों के नायक, भारतीय संविधान के प्रमुख निर्माता, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने तीन सूत्रीय उपदेश दिया- शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो।

इस अवसर पर शिक्षा विभाग के शिक्षक डॉ. सरोज राय ने नवरात्रि की महत्ता, डॉ. आभा सिंह ने डॉ. भीमराव अंबेडकर के अवदान, डॉ. गिरिराज भोजक ने हिन्दू नव वर्ष से प्रेरणा और छात्राओं- निरंजन राठौड़, भावना चौधरी, अमीषा, निकिता, पूनिया, रंजना, साक्षी चौहान, मनीषा मेहरा, पूजा चौधरी, प्रियंका चौधरी, सरिता मीना, मोनिका चौधरी ने भी संवाद में अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने मंच संचालन एवं आभार ज्ञापन किया।

नववर्ष नवीनता, नवोन्मेष एवं सकारात्मक ऊर्जा का दिवस

संस्थान के शिक्षा विभाग में 1 जनवरी को नववर्ष का आयोजन ऑनलाइन किया गया। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि नववर्ष नवीनता, नवोन्मेष एवं सकारात्मक ऊर्जा से ओतप्रोत करता है। वर्तमान में खुश रहने के लिए लक्ष्यपरक, हुनर विकसित एवं आनन्दप्रद कार्य करने चाहिए। हमें सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना चाहिए तभी हम कार्य में नवीनता, नवोन्मेष एवं नई उड़ान भर सकते हैं। कार्यक्रम में रेखा शेखावत, सरिता, रुबीना, चंचल शेखावत, हर्षिता स्वामी, ऋतु स्वामी, मनीषा टाक, सुमन चौधरी, रजनी भाटी, आमना, साधना सैनी, चंद्रकांता सोनी, पल्लवी स्वामी, नीतू जोशी, सुनीता चौधरी एवं किरण सांडू ने भाषण, कविता और गीत, नृत्य द्वारा अपने भावों को अभिव्यक्त किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अमिता जैन ने किया। कार्यक्रम का संयोजन मनीषा पंवार एवं नीतू कंवर ने किया।

लड़कियां होती हैं अनमोल हीरा

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर एनएसएस द्वारा कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वावधान में 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महिला नेत्री गोपालपुरा सरपंच सविता राठी ने एनएसएस स्वयंसेविकाओं को नदी की तरह से निरन्तर आगे बढते रहने की प्रेरणा देते हुए कहा कि राह में बाधक बनने वाले कंकरों को दूर करना ही होता है। राठी ने अनुशासन पालन की जरूरत बताते हुए कहा कि दो किनारों के बीच बहने वाली नदी अगर किनारों की मर्यादा को नहीं लांघती है, तो वह जीवनदायी होती है और अगर किनारों के अनुशासन का उल्लंघन कर देती है, तो वह विनाशक बन जाती है। उन्होंने कहा कि परिवार में लड़कियों पर अनेक बंदिशें होती हैं, जिनको लेकर उनके मन में अनेक भाव आते होंगे, लेकिन उन्हें यह समझना चाहिए कि जो हीरा जितना कीमती होगा, उसकी उतनी ही अधिक निगरानी की जाती है, उन्हें तिजोरियों में बंद रखा जाता है। और लड़कियां तो अनमोल हीरा होती हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि जिनमें आत्मबल प्रबल होता है, उन्हें प्रगति से कोई नहीं रोक सकता। लैंगिक भेदभाव उनके विकास में बाधक नहीं बन सकता है। उन्होंने देश की प्रधानमंत्री रही इंदिरा गांधी, ब्रिटेन की मार्गरेट थेचर, बेनजीर भुट्टो आदि अनेक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि अपनी संकल्प शक्ति के आधार पर वे अपने देश की सुप्रीम पावर बन पाईं। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि प्रो. रेखा तिवाड़ी, प्रगति चौरड़िया, श्वेता खटेड़ ने भी महिला दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए। एनएसएस छात्राओं- दिव्यता कोठारी, शहनाज बानो, स्नेहा, आयशा सिंह, संतोष, निकिता, महक चौहान, मनीषा तुनगरिया, राधिका गहलोत ने भी अपने विचार व कविताएं प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम के प्रारम्भ में एनएसएस की प्रथम इकाई की प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने स्वागत वक्तव्य एवं अतिथि परिचय प्रस्तुत किया। एनएसएस की द्वितीय ईकाई प्रभारी डॉ. बलवीर सिंह चारण ने अंत में आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन नवनिधि दौलावत व इरम छींपा ने किया।

पोस्टर प्रतियोगिता में स्मृति कुमारी रही प्रथम

संस्थान में आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वाधान में 6 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसमें अनेक छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में बीएससी-बीएड चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा स्मृति कुमारी प्रथम स्थान पर रही। सुनीता चौधरी द्वितीय तथा नेहा कंवर व निकिता मेघवाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। यह प्रतियोगिता राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर तथा इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह के निर्देशन में आयोजित की गई ॥

मासिक सड़क सुरक्षा कार्यक्रम के तहत व्याख्यान

संस्थान में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वाधान में भारत सरकार द्वारा चलाए गए मासिक सड़क सुरक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत 12 फरवरी को एक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत सड़क सुरक्षा सम्बंधी नियमों एवं सावधानियों की जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम की शुरुआत में इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने सड़क सुरक्षा के महत्त्व को उजागर किया। तत्पश्चात् सुरभि नाहटा, नफीसा बानो तथा स्नेहा पारीक ने यातायात नियमों एवं सावधानियों की जानकारी प्रदान करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य तथा दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने सड़क सुरक्षा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि न केवल हमें यातायात नियमों की जानकारी होना आवश्यक है, बल्कि उनका स्वेच्छा से पालन करना भी हमारा नैतिक कर्तव्य है। अंत में इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

तम्बाकू पर पूरी तरह से रोक लगनी जरूरी- डॉ. सारण
ऑनलाइन मनाया गया विश्व तम्बाकू निषेध दिवस

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण में विश्व तम्बाकू निषेध दिवस कार्यक्रम का आयोजन 31 मई को राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाईयों के संयुक्त तत्त्वावधान में ऑनलाइन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता राजकीय चिकित्सालय के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. बी.आर. सारण ने कार्यक्रम में तम्बाकू सेवन से होने वाली विभिन्न बीमारियों को रेखांकित करते हुए समाज में इसको फैलने से रोकने के उपायों पर प्रकाश डाला तथा कहा कि तम्बाकू का सेवन पूरी तरह से बंद किया जाना आवश्यक है। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने तम्बाकू सेवन शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभावों को बताते हुए भावी पीढ़ी पर होने वाले नकारात्मक प्रभावों पर प्रकाश डाला और तम्बाकू सेवन को कम करने के विभिन्न उपाय भी बताए। वेबिनार के प्रारम्भ में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम की प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की और स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम में स्नेहा पारीक, संतोष ठोलिया, दिव्यता कोठारी, सुरभि नाहटा आदि छात्राओं ने भी अपने विचार रखे। अंत में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में संकाय सदस्यों सहित लगभग 87 स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकायें उपस्थित रहे।

एनसीसी कैडेट्स लक्ष्य को फोकस करके सफलता की ओर बढें- प्रो. त्रिपाठी
एनसीसी की गर्ल्स बटालियन का पांच दिवसीय शिविर सम्पन्न

संस्थान में नेशनल केडिट कोर (एनसीसी) की 3राज गर्ल्स बटालियन के पांच दिवसीय संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं सोनादेवी सेठिया गर्ल्स कॉलेज सुजानगढ की कैडेट्स छात्राओं ने भाग लेकर सलामी शस्त्र, कैमोफ्लेगिंग, गार्ड माउंटिंग, प्राथमिक उपचार, मैप रीडिंग, आपदा प्रबंधन आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। शिविर में प्रशिक्षण के दौरान सीखे गए सभी कार्यों की आखिर में परीक्षा भी ली गई। शिविर में कुल 53 कैडेट्स छात्राओं ने भाग लिया। समापन समारोह में कैडेट्स दमयंती व कृष्णा प्रजापत ने नृत्य प्रस्तुत किया। सविता, मनीषा व सुमन ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। कैडेट्स ने इस अवसर पर अपने शिविर के अनुभवों को भी साझा किया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम में कहा कि अर्जुन द्वारा केवल मछली की आंख देखकर निशाना लगाने की तरह ही छात्राओं को अपने लक्ष्य को फोकस करके चलना चाहिए और उसी मुताबिक अपने कैरियर का चुनाव करना चाहिए। दृढ प्रतिज्ञा और मजबूत इच्छाशक्ति से ही लक्ष्य प्राप्त करने में सफलता मिल सकती है। एनसीसी प्रभारी आयुषी शर्मा ने बताया कि छात्राओं को पाइंट टू-टू राइफल को खोलना, जोड़ना, लोडिंग, कॉकिंग, होल्डिंग, फायरिंग पॉजिशन, आर्म्स फोर्स के बैज, रैंक सम्मान आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। सोना देवी सेठिया गर्ल्स महाविद्यालय सुजानगढ की एनसीसी प्रभारी मेघना सोनी ने बताया कि शिविर में कैडेट्स को विभिन्न स्थलों की पहचान, ड्रिल, मानचित्रों के प्रकार एवं पारम्परिक संकेतों की पहचान, इन्फेन्टरी बटालियन के संगठन एवं उसके प्रमुख हथियार, बुनियादी संचार प्रक्रिया, आपदा प्रबंधन, पर्सनैलिटी डवलेपमेंट, आत्मरक्षा, फिटनैस, आत्मविश्वास वृद्धि, टीमवर्क आदि पर कक्षाओं का संचालन किया जाकर प्रशिक्षित किया गया। शिविर में कमांडिंग ऑफिसर कर्नल अभिषेक चतुर्वेदी, सूबेदार मेजर गिरधारीसिंह व हवलदार बलजिन्द्र सिंह ने कैडेट्स को विभिन्न प्रशिक्षण प्रदान किया।

झलक : चंद अखबारी कतरनें

2-डीजी दवा की खोज में लाडनूं के प्रोफेसर की अहम भूमिका

कैसे काम करती है यह दवा: 2-डी

दवा वायरस को करती है कमजो

प्रो. दूगड़ फिर बने जैविभा विश्वविद्यालय के कुलपति

विवि की प्रगति और व्यवस्थाओं में सकारात्मक परिवर्तन को देखते हुए दूगड़ का कार्यकाल पांच साल बढ़ाया

देशी छात्रों व संस्थानों के साथ ढेंगी गतिविधियां : कुलपति

विलक्षण प्रतिभा के धनी थे आचार्य महाप्रज्ञ

विश्व संत महाप्रज्ञ को भारत रत्न दि

आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण दिवस पर राष्ट्रीय वेबिनार आ

जैविभा विश्वविद्यालय का 31 वां स्थापना दिवस समारोह आयोजि

हीरक जयंती पर होंगे विविध आयोजन, उत्कृष्ट कर्मिकों व विद्यार्थियों का किया सम्मान

लाडनूं के जैविभा विश्वविद्यालय के समारोह में केडेट को सम्मानित कुलपति एवं अतिथि।

प्राकृतिक व योग महाविद्यालय शीघ्र होगा

देश के 10 प्रीमियम विश्ववि में जैन विश्व भारती संस्थान

एनसीसी की गर्ल्स बटालियन के शिविर का समापन, 53 कैडेट्स ने भाग लिया

जैविभा विश्वविद्यालय में एनसीसी का पांच दिवसीय शिविर का आयोजन

लाडनूं. एनसीसी के पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन पर कैडेट्स।